रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

किलोल

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 9, सितंबर 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
वार्षिक - 720/-
आजीवन – 10000/-

अनुक्रमणिका

जागो 8

जनसंख्या नियंत्रण 9

बरसा बचपन का 10

पंचतंत्र की कथाएँ- कौए और उल्लू 11

हम भारत के फूल हैं 15

नारियल 16

पंछी की बोली 17

शिक्षक 19

अपना प्यारा देश 20

कोंपल फिर से उगना है 21

अधूरी कहानी पूरी करो 22

स्कूल खुलने पर तैयारी 22

अपर्णा दीपक द्वारा पूरी की गई कहानी 23

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 24

ईमानदार वीर बालक 24

गिरगिट 25

गुब्बारे 26

गुरु 27

सफल होने का मूलमंत्र 29

गुरु महिमा 30

घोंसला 32

तिरंगा 33

पहेली 34

फुलवारी 35
चलो नौनिहालों को प्रेरित करें 37
बीत रहा जीवन 38
पंछियों की दुनिया 40
बेटियाँ 41
आओ पेड़ लगाएँ 42
बेटियाँ 43
कौए की चालाकी 44
गुरु 45
चिड़िया 46
राखी भेजवा देना 47
चूहा, बतख और मेंढक 48
साल वन 50
मेरा गाँव 51
माँ 52
जादुई ताला 53
जनमानस का वल्लभ मैं 55
मित्र 57
मेरा देश 58
जानव जनऊला 59
मौन 62
हिंदी 63
बाल कविता 64
बाल पहेलियाँ 65

हिन्दी भाषा 67
Rhymes 68
सूरज 69
सूरज 70
राखी 71
वन की देवी 72
माँ की ममता 74
आने वाला पाँच सितम्बर 76
चंदा मामा 77
रचनाकार- रीमा ठाकुर 77
पेड़ हमारे दोस्त 78
तितली 80
फलों की संख्या 81
टोकियो ओलम्पिक प्रदर्शन 82
गेड़ी 84
दिल 86
नन्ही गुलाब 87
सीखें 89
सुरता 90
जंगल 92
शांति की तलाश 93
शिक्षा 95
औलाद 96
बादल के रंग निराले 98
शिक्षक हमें सिखाता हैं 100

पापा ! क्या तारे भी लोरी सुनते है 101
शालिनी 102
बादल का खेल 104
पेड़ो के है नाम अनेक 105
गौरैया 106
परियों के देश में 108
कुत्ता और कोरोना 109
पाँच बाल गीत 111
हे उमापति 112
छत्तीसगढ़ के छत्तीस भाजी 113
अंगना मा शिक्षा 115
रट्टू तोता 116
सच्ची दोस्ती 117
गुहार 118
लाल बुझक्कड़ 119
मोहल्ला क्लास 120
यातायात संकेत 121
हरेली 122
दिया-बाती 124
निवारण 126
जिराफ 127
काम करों 128
स्वतंत्रता दिवस 129
राखी 131

अंगना मा शिक्षा 133

ऑनलाइन शिक्षा 134

पचरी 135

धैर्य और हिम्मत 137

बहादुर बालक 139

उमड़ घूमड़ के आये बादल 140

NEP पर विशेष चर्चा 141

देख कर मैं व्यथित हूँ 143

अंश 146

ठंडी हवा 148

चित्र देख कर कहानी लिखो 150

सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी 150

वाणी मसीह द्वारा भेजी गई कहानी 152

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 153

भाखा जनऊला 154

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

सत्रह माह की लंबी अवधि के बाद कोरोना का कहर कम हो गया है. अब हमारे स्कूल खुलने लगे हैं. छोटे बच्चों के स्कूल खोलने हेतु पालकों की सहमति आवश्यक है. इतने दिनों से आप अपने स्कूल को, अपने स्कूल के दोस्तों को अवश्य याद कर रहे होंगे. अपने माता-पिता से स्कूल खोलने के मांग करने एवं आपको स्कूल भेजने का अनुरोध करें.

इस माह शिक्षक दिवस है. स्कूलों के बंद होने के बावजूद आपके शिक्षकों ने आपको विभिन्न तरीकों से सीखने में सहयोग किया. हम सबको अपने शिक्षकों पर पूरा विश्वास करते हुए उनसे अधिक से अधिक सीखने की कोशिश करनी चाहिए. आशा है कि आप सब पिछले वर्ष सीखने में हुए नुकसान की भरपाई के लिए कुछ अधिक मेहनत अपने शिक्षकों के साथ मिलकर करेंगे.

आपका
आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17बी, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में

मुद्रित.
संपादक डॉ. आलोक शुक्ला.

जागो

रचनाकार- महेंद्र देवांगन "माटी"

जाग सबेरे चिड़ियाँ चहके, कोयल गाना गाए.
कमल ताल में खिले हुए हैं, सबके मन को भाए..

रंभाती हैं गैया देखो, बछड़ा भी रंभाए.
दाना पानी लेकर अब तो, मोहन भैया आए..

उठ जाओ अब सोकर प्यारे, मुर्गा बाँग लगाए.
आलस छोड़ो बिस्तर त्यागो, सबको आज जगाए..

माटी पुत्र चले खेतों में, हल को लेकर जाए.
इस माटी का कण-कण पावन, माथे तिलक लगाएं..

*****

<u>जनसंख्या नियंत्रण</u>

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

बढ़ते संख्या रोज, लोग भी बढ़ते जाते.
नहीं नियंत्रण होय, तभी संकट है आते..
आबादी को देख, सदा बढ़ती महँगाई.
जनसंख्या पर रोक, करो सब मिलकर भाई..

करे नौकरी आस, बढ़ा के बच्चे सारे.
घूमे कागज रोज, लोग किस्मत से हारे..
बेटी बेटा एक, भेद ना इसमें जानो.
जीवन का आधार, सदा दोनो को मानो..

जनसंख्या पर रोक, करें जल्दी ही जारी.
महँगाई की मार, पड़ी है सब पर भारी..
छोटा हो परिवार, तभी सब साथ निभाते.
थामे रहते हाथ, सुखी जीवन को पाते..

*****

बरसा बचपन का

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

छन्न पकैया छन्न पकैया, बचपन लगे सुहाने.
सारे बच्चे मिलकर जाते, पोखर साथ नहाने..

छन्न पकैया छन्न पकैया, बच्चों की है टोली.
पेड़ों के संग खेला करते, बोले मीठी बोली..

छन्न पकैया छन्न पकैया, मस्ती करते सारे.
झूम-झूम कर गाते गाना, लगते कितने प्यारे..

छन्न पकैया छन्न पकैया, पेड़ों पर चढ़ जाते.
बन्दर जैसे कूद-कूद कर, बच्चें सभी नहाते..

छन्न पकैया छन्न पकैया, हरी भरी है डाली.
जी लो अपना बचपन सारा, अभी उमर है बाली..

*****

पंचतंत्र की कथाएँ- कौए और उल्लू

बहुत समय की बात है. एक गांव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता था. उसकी ज़िंदगी में बेहद ख़ुशहाल थी. उसके पास भगवान का दिया सब कुछ था. सुंदर-सुशील पत्नी, होशियार बच्चे, खेत-ज़मीन-पैसे थे. उसकी ज़मीन भी बेहद उपजाऊ थी, जिसमें वो जो चाहे फसल उगा सकता था. लेकिन एक समस्या थी कि वो ख़ुद बहुत ही ज़्यादा आलसी था. कभी काम नहीं करता था. उसकी पत्नी उसे समझा-समझा कर थक गई थी कि अपना काम ख़ुद करो, खेत पर जाकर देखो, लेकिन वो कभी काम नहीं करता था. वो कहता, "मैं कभी काम नहीं करूंगा." उसकी पत्नी उसके आलस्य से बेहद परेशान रहती थी, लेकिन वो चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती थी. एक दिन एक साधु ब्राह्मण के घर आया और ब्राह्मण ने उसका ख़ूब आदर-सत्कार किया. ख़ुश होकर सम्मानपूर्वक उसकी सेवा की. साधु ब्राह्मण की सेवा से बेहद प्रसन्न हुआ और ख़ुश होकर साधु ने कहा कि "मैं तुम्हारे सम्मान व आदर से बेहद ख़ुश हूं, तुम कोई वरदान मांगो." ब्राह्मण को तो मुंहमांगी मुराद मिल गई. उसने कहा, "बाबा, कोई ऐसा वरदान दो कि मुझे ख़ुद कभी कोई काम न करना पड़े. आप मुझे कोई ऐसा आदमी दे दो, जो मेरे सारे काम कर दिया करे."

बाबा ने कहा, "ठीक है, ऐसा ही होगा, लेकिन ध्यान रहे, तुम्हारे पास इतना काम होना चाहिए कि तुम उसे हमेशा व्यस्त रख सको." यह कहकर बाबा चले गए और एक बड़ा-सा राक्षसनुमा जिन्न प्रकट हुआ. वो कहने लगा, "मालिक, मुझे कोई काम दो, मुझे काम चाहिए."

ब्राह्मण उसे देखकर पहले तो थोड़ा डर गया और सोचने लगा, तभी जिन्न बोला, "जल्दी काम दो वरना मैं तुम्हें खा जाऊंगा."

ब्राह्मण ने कहा, “जाओ और जाकर खेत में पानी डालो.” यह सुनकर जिन्न तुरंत गायब हो गया और ब्राह्मण ने राहत की सांस ली और अपनी पत्नी से पानी मांगकर पीने लगा. लेकिन जिन्न कुछ ही देर में वापस आ गया और बोला, “सारा काम हो गया, अब और काम दो.”

ब्राह्मण घबरा गया और बोला कि अब तुम आराम करो, बाकी काम कल करना. जिन्न बोला, “नहीं, मुझे काम चाहिए, वरना मैं तुम्हें खा जाऊंगा.”

ब्राह्मण सोचने लगा और बोला,“तो जाकर खेत जोत लो, इसमें तुम्हें पूरी रात लग जाएगी.” जिन्न गायब हो गया. आलसी ब्राह्मण सोचने लगा कि मैं तो बड़ा चतुर हूं. वो अब खाना खाने बैठ गया. वो अपनी पत्नी से बोला, “अब मुझे कोई काम नहीं करना पड़ेगा, अब तो ज़िंदगीभर का आराम हो गया.” ब्राह्मण की पत्नी सोचने लगी कि कितना ग़लत सोच रहे हैं उसके पति. इसी बीच वो जिन्न वापस आ गया और बोला, “काम दो, मेरा काम हो गया. जल्दी दो, वरना मैं तुम्हें खा जाऊंगा.” ब्राह्मण सोचने लगा कि अब तो उसके पास कोई काम नहीं बचा. अब क्या होगा? इसी बीच ब्राह्मण की पत्नी बोली, “सुनिए, मैं इसे कोई काम दे सकती हूं क्या?”

ब्राह्मण ने कहा, “दे तो सकती हो, लेकिन तुम क्या काम दोगी?”

ब्राह्मण की पत्नी ने कहा, “आप चिंता मत करो. वो मैं देख लूंगी.”

वो जिन्न से मुखातिब होकर बोली, “तुम बाहर जाकर हमारे कुत्ते मोती की पूंछ सीधी कर दो. ध्यान रहे, पूंछ पूरी तरह से सीधी हो जानी चाहिए.”

जिन्न चला गया. उसके जाते ही ब्राह्मण की पत्नी ने कहा, “देखा आपने कि आलस कितना ख़तरनाक हो सकता है. पहले आपको काम करना पसंद नहीं था और अब आपको अपनी जान बचाने के लिए सोचना पड़ रहा कि उसे क्या काम दें.”

ब्राह्मण को अपनी ग़लती का एहसास हुआ और वो बोला, “तुम सही कह रही हो, अब मैं कभी आलस नहीं करूंगा, लेकिन अब मुझे डर इस बात का है कि इसे आगे क्या काम देंगे, यह मोती की पूंछ सीधी करके आता ही होगा. मुझे बहुत डर लग रहा है. हमारी जान पर बन आई अब तो. यह हमें मार डालेगा.”

ब्राह्मण की पत्नी हंसने लगी और बोली, “डरने की बात नहीं, चिंता मत करो, वो कभी भी मोती की पूंछ सीधी नहीं कर पाएगा.” वहां जिन्न लाख कोशिशों के बाद भी मोती की पूंछ सीधी नहीं कर पाया. पूंछ छोड़ने के बाद फिर टेढ़ी हो जाती थी. रातभर वो यही करता रहा.

ब्राह्मण की पत्नी ने कहा, “अब आप मुझसे वादा करो कि कभी आलस नहीं करोगे और अपना काम ख़ुद करोगे.”

ब्राह्मण ने पत्नी से वादा किया और दोनों चैन से सो गए.

अगली सुबह ब्राह्मण खेत जाने के लिए घर से निकला, तो देखा जिन्न मोती की पूंछ ही सीधी कर रहा था. उसने जिन्न को छेड़ते हुए पूछा, “क्या हुआ, अब तक काम पूरा नहीं हुआ क्या? जल्दी करो, मेरे पास तुम्हारे लिए और भी काम हैं.” जिन्न बोला, “मालिक मैं जल्द ही यह काम पूरा कर लूंगा.”

ब्राह्मण उसकी बात सुनकर हंसते-हंसते खेत पर काम करने चला गया और उसके बाद उसने आलस हमेशा के लिए त्याग दिया.

*****

सावन तीज

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

सावन की ये तीज, सभी के मन को भाये.
बनते घर पकवान, द्वार आँगन महकाये..
हरियाली चहुँ ओर, पुष्प की खुशबू आती.
कलियाँ रंग-बिरंगी, सभी के मन को भाती..

सज-धज नारी आज, मायके में है जाती.
सखी-सहेली साथ, बैठ के बात बताती..
मिलकर बहना भाई , खूब मस्ती हैं करते.
मम्मी-पापा साथ, घरों में खुशियाँ भरते..

बाबा भोलेनाथ, भजन सब मिलकर गाते.
सखी-सहेली साथ, सभी मन्दिर में जाते..
करे तीज उपवास, पिया की उम्र बढ़ाती.
शिव भोले को आज, दूध-दही चढ़ाती..

कर सोलह श्रृँगार, प्रार्थना करती नारी.
कर दो संकट दूर, कष्ट आये ना भारी..
सावन की है तीज, डाल में बाँधे झूले.
तन-मन भरे उमंग, दिलों में कलियाँ फूले..

*****

हम भारत के फूल हैं

रचनाकार- के पी साहू

हम भारत के फूल हैं,
ममता के नव स्कूल हैं.

रंग अनेक हैं,
रूप अनेक हैं.

बोली, भाषा भी अनेक हैं,
हममें कोई जूही, चंपा.

कोई गुलाब के फूल हैं,
हम भारत के फूल हैं.

नेहरू के राज दुलारे हम,
बापू के बच्चे प्यारे हम.

हममें कोई इंदिरा,लक्ष्मी,
कोई कलाम के मूल हैं.

हम भारत के फूल हैं,
ममता के नव स्कूल हैं.

*****

नारियल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

ऊँचे लंबे पेड़ों पर
लगते कितने सुंदर फल..

सब फलों से श्रेष्ठ हैं फल
नाम हैं उनका नारियल फल..

मिठे फल और मिठे जल
नहीं हैं इनसा दूजा फल..

नरम अंदर है बाहर सख्त
फल आने में लगते वक्त..

पूजा पाठ में काम आता
प्रभू चरण में स्थान पाता..

तन मन उनका स्वस्थ रहता
जो नारियल का पानी पिता..

सर्वाधिक नारियल उत्पादक राज्य
केरल,तमिल,कर्नाटक राज्य..

*****

पंछी की बोली

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

कउआं बोले कांव-कांव,
बइठ पेड़ के छाँव-छाँव.

कोयल बोले कुहू-कुहू,
गुरतूर बोली सबला देहु.

पपीहा बोले हे पी-पी,
अपन जिनगी ल सुग्घर जी.

मिट्ठू बोलत हे टें-टें,
राम के नाम तय हर ले.

कुकरा बोलय कुकड़ूकू,
शुभ सन्देश सबला देहु.

मेचका बोलत हे टर्र-टर्र,
सबके दुख ल तय ह हर.

परेवा बोलय गुटूरगू-गुटूरगू,
चारी चुगली तुमन झन करहु.

चिरई बोलत हे ची ची ची,
सुघर पानी सब झन पी.

मजूर नाचत हे पंख ल खोल,
झूठ कभू तय हर झन बोल.

पानी बरसय झर-झर-झर,
ढेकी म तय हर धान ल छर.

*****

शिक्षक

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

शिक्षा और संस्कार सिखाता,
बच्चों का है भाग्य विधाता.

अज्ञानता को दूर भगाकर,
ज्ञान का प्रकाश सदा फैलाता.

पढ़ना-लिखना हमें सिखाता,
अनुशासन का पाठ पढ़ाता.

सही गलत का ज्ञान कराकर,
योग्य नागरिक हमें बनाता.

सबका आदर करना हमें सिखाता,
गलती हमें सही राह दिखाता.

शिक्षा का अलख जगाकर,
जन जन तक पहुंचाता.

*****

अपना प्यारा देश

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

सबसे न्यारा, सबसे अच्छा,प्यारा अपना देश.
सब रहते हैं इस बगिया में, जाकिर, जॉन, महेश..

सुखविंदर भी रहते इसमें,और सलमा भी रहती .
सब मिलकर त्योहार मनाते, मस्त हवा है बहती..

आशा का है घर का मंदिर, जस्सी का गुरुद्वारा.
जारा की मस्ज़िद भी यहीं है, चर्च मैरी का प्यारा..

धर्मों का सम्मान करें हम, सब गाते यह गान.
सर्वश्रेष्ठ है भारत अपना, प्यारा देश महान..

*****

कोंपल फिर से उगना है

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

भूख-प्यास को हराना है,
काम सभी को करना है.

लक्ष्य साधकर निज मन में,
पथ पर आगे बढ़ना है.

पग-पग पर बाधाओं से,
हिम्मत से ही लड़ना है.

छट जायेंगे संकट के बादल,
मन में धीरज रखना है.

पतझड़ आता,आने दो,
कोंपल फिर से उगना है.

आएँगी खुशियाँ फिर से,
श्रम से कभी न डरना है.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

स्कूल खुलने पर तैयारी

बालोद जिले के ग्राम सांकरा में मन्नूलाल अपने छोटे से परिवार के साथ रहता था. वह स्वयं पढ़ा- लिखा नहीं था. पर वह अपने बेटे जुगनू एवं बेटी रमशीला को पढ़ाना चाहता था. पिछले दो वर्षों से स्कूल और आंगनबाड़ी बंद थे. वह बच्चों को पढने भेज नहीं पा रहा था. उसने आनलाइन पढाई के बारे में सुन रखा था. पर उसके पास स्मार्टफोन नहीं था. वह इंटरनेट का खर्च भी नहीं उठा सकता था. उसकी पत्नी मीराबाई कक्षा पांच तक पढ़ी थी. उसके माता-पिता ने उसकी शादी छोटी उम्र में ही कर दी. शादी के बाद उसकी पढ़ाई छूट गयी.

मन्नूलाल के गाँव सांकरा के प्राथमिक स्कूल में महिला शिक्षिका ने उसे अपनी पत्नी को अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के बारे में बताया. इस कार्यक्रम में माताओं को अपने छोटे बच्चों को घर पर रहकर पढ़ाने के लिए तैयार किया जा रहा है. गाँव में बच्चों की पढाई के लिए मोहल्ला कक्षाएं भी शुरू हुई है. मन्नूलाल ने अपने बेटे जुगनू को वहां भेजने का निश्चय किया. इस तरह दोनों बच्चों की पढाई धीरे-धीरे शुरू हो गयी. इतने में मन्नूलाल को पता चला कि सरकार स्कूल खोलने जा रही है. लेकिन प्राथमिक स्कूल खोलने के लिए पालकों को लिखित में सहमति देनी थी. मन्नूलाल सोच में पड़ गया. क्या मेरे लिखने मात्र से सरकार स्कूल खोल देगी?

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

अपर्णा दीपक द्वारा पूरी की गई कहानी

मन्नूलाल सोच में पड़ गया क्या मेरे लिखने मात्र से सरकार स्कूल खोल देगी. मन्नूलाल सोचने लगा जब मेरे बच्चे लिख कर देने मात्र से स्कूल जा पाएंगे तो मैं जरूर पढ़ लूंगा यह ठान लिया और अपनी पत्नी को 'अंगना म शिक्षा' कार्यक्रम में जुड़ने को कहा और उसकी शुरुआत अपने घर से किया. शाम को काम से वापस आने के बाद घर में अपने दोनों बच्चों के साथ पढ़ने बैठ जाता. उसकी पत्नी पढ़ाती थी.

मेहनत उसकी रंग लाई और वह बहुत जल्द पढ़न- लिखना सीख गया, फिर लिखकर सहमति पत्र दिया. अब सरकारी स्कूल खोल दिए. बच्चे स्कूल जाने लगे अब मन्नूलाल की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, अपने इस सफलता सेवा फूले नहीं समा रहा था. 'जब जागो तब सवेरा' यह कहावत उसके जीवन में चरितार्थ होने लगा, पर मन्नूलाल पहले जैसा नहीं रहा. अब उसकी सोच में बहुत परिवर्तन आ गया था. शिक्षा का महत्व समझ आ गया था. वह अपने दोनों बच्चे जुगनू और राम शीला को खूब पढ़ाना चाहता है, ताकि बेटा बड़ा होकर शिक्षक बने और बेटी डॉक्टर बन सके. उसके बच्चे भी खूब मन लगाकर पढ़ाई कर रहे हैं. अब वैज्ञानिक पद्धति से खेती करना चाहता है जिससे मुनाफा ज्यादा होगा. इससे उसके बच्चों को उच्च शिक्षा देने का सपना साकार हो जाएगा. अब वह और उसका परिवार पहले से ज्यादा सुखी और खुशहाल है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

ईमानदार वीर बालक

रमेश बहुत ही प्यारा बालक था। वह कक्षा दूसरी में पढ़ता। रमेश विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय त्यौहार मनाया जाने वाला था. रमेश बहुत उत्साहित था इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए. रमेश को उसकी कक्षा अध्यापिका ने स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग लेने के लिए बोला था. उसके हर्ष का कोई ठिकाना नहीं था, वह खुशी-खुशी इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए तैयारियां करने लगा.

आगे क्या हुआ होगा, इसके बारे में आप सोचना शुरू करें और इस कहानी को पूरा कर हमें ईमेल से kilolmagazine@gmail.com पर भेज देवें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे. कहानी लिखने के साथ-साथ आप अपने आसपास ऐसे मन्नूलाल और मीराबाई को उनके सपनों को पूरा करने में सहयोग करें.

गिरगिट

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव

कभी झाड़ियों में छिप जाता
कभी निकल कर बाहर आता.

छिपकलियों जैसा दिखता है;
देखो यह गिरगिट कहलाता.

रंग बदल कर बार-बार यह;
अपने दुश्मन को भरमाता.

लम्बी जीभ फेंक कर बाहर
छोटे कीट-पतंगे खाता.

एक समय में एक साथ यह
चारों तरफ नजर दौड़ाता.

*****

गुब्बारे

रचनाकार- कंचन सिंह

लाल-पीले, हरे-नीले, प्यारे नारंगी ये गुब्बारे.
इनके आगे हम बच्चों के भोले दिल भी हारे..

मुझे पसंद रंग नीला, आसमान सा हो जाऊंगा.
पसंद मुझे रंग हरा, हरियाली बन छा जाऊंगा..

सूर्योदय सा लाल रंग ले, सुप्रभात कर जाऊंगा.
ले पीला रंग सरसों सा, धरती पर बिछ जाऊंगा..

तो आओ सुनो, हमें दे दो हमारे मनभावन,
प्यारे, लाल-पीले, हरे-नीले, नारंगी गुब्बारे..

*****

गुरु

रचनाकार- प्रतिभा त्रिपाठी

गुरु हमारे मन मंदिर,
गुरु हमारे प्राण.
गुरु की सेवा में मिले,
जीवन को आराम..

नमन करो तुम उन गुरूओं कों,
जिन्होंने अज्ञानता को दूर किया.
सत्मार्ग पर चलना सिखला के,
जीवन का उद्धार किया..

गुरु ज्ञान की ज्योत जलाकर,
दे विद्या का दान.
जीवन को खुशियों से भरें,
बढायें हमारा मान..

प्रथम गुरु है मॉ हमारी,
जिसने दिया जीवन दान,
आदर्शों की मिसाल बनाकर
बढ़ाई जीवन की शान..

पग-पग साथ निभाये,
सच्ची राह दिखाये.
संकट में जो हँसना सिखाये,
वही सच्चा गुरु कहलाये..

*****

सफल होने का मूलमंत्र

रचनाकार- सोमेश देवांगन

इंसान को अगर हर जगह सफल होना है तो उसे इन तीन बातों का ध्यान रखना होगा. वे मुख्य तीन बातें, जिसको मैंने हमेशा अपने साथ रखा और आगे बढ़ा. वे मुख्य तीन बातें ख्वाहिश, यकीन और उम्मीद हैं. यदि इन तीन बातों को हमेशा अपने पास रखें तो किसी भी कार्य में सफल होने से हमें कोई नहीं रोक सकता.

ख्वाहिश- अगर हमने किसी भी कार्य को करने की दिल से ख्वाहिश की हो और किसी भी कीमत पर अपने ख्वाहिश को पूरा करना हो तो कोई भी ताकत हमारे ख्वाहिश को पूरा करने से ,उस कार्य को पूरा करने से रोक नहीं सकता .

यकीन- हमें यकीन रखना होगा और करना होगा कि हम जो कर रहे हैं,सही कर रहे हैं.किसी के बहकावे में आ कर अपना कार्य अधूरा नहीं छोड़ना है और यकीन रखना है अपने ऊपर कि जो हो रहा है,सही हो रहा है.

उम्मीद-जब कोई कार्य करना है और उसे सिद्ध भी करना है तो हमें हमेशा अपने से ही उम्मीद करना है कि हर कार्य मैं कर सकता हूँ.चाहे कोई भी मुसीबत आये,उसे मैं कर सकता हूँ और मेरा काम पूर्ण रूप से सिद्ध भी होगा. बिना किसी रुकावट के यही उम्मीद अपने से करते हैं तो पूर्ण रूप से हर कार्य में हमें सफलता मिलेगी.

*****

गुरु महिमा

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

गुरु महिमा का करु,
दिन-प्रतिदिन मैं पाठ .
उनकी कृपा से ही तो,
खुल जाए बंद कपाट ..

दुनिया के राग द्वेष से,
जब होए मन क्लांत .
गुरु के शीतल ज्ञान से,
हो जाए मन शांत ..

जीव भटके जग में,
ना है कोई पहचान .
मोह माया है कटते,
गुरु देते जब ज्ञान ..

वेदों का ज्ञान देकर,
करते गुरु हमें सचेत .
माया की कालिमा,
करती है सदा अचेत ..

देह मिलती तात से,
और माँ देती है जान .
गुरु के आशीर्वाद से,
जग मे मिले पहचान ..

हमारे सब अपराध को,
सह जाए बन कर ढाल .
चंदन सम शीतल रहते,
गुरुजी बन रहे कृपाल ..

गुरु चरणों में ही रहे,
नित दिन मेरा ध्यान .
कृपा आपकी पाकर,
रज बन जाए महान ..

*****

घोंसला

रचनाकार- रीमा महेंद्र ठाकुर

घर के ऊपर एक घोंसला,
चिड़िया रानी आओ न.
दाने कितने छत पर फैले,
आकर तुम खा जाओ न..

चिड़िया रानी पंख फैलाकर,
फुर्र से तुम उड़ जाती हो.
नीले खुले आसमान में,
दिनभर तुम बलखाती हो..

तिनका-तिनका करती हासिल,
फिर भी तुम न थकती हो.
अपना घर बनाने की खातिर,
दिनभर मेहनत करती हो..

नन्हें बच्चे शोर मचाते,
झट से दौड़ी आती हो.
भूखे-प्यासे राह देखते,
फिर भी तुम मुस्काती हो..

चोंच में लाती दाना उनका,
प्यार से उन्हें खिलाती हो.
सारे बच्चे प्यार जताते,
पंख में उन्हें छुपाती हो..

*****

तिरंगा

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह

मेरे देश का ध्वज सजा तीन रंगों से,
तीन रंगो से सजा, हैं कहते इसे तिरंगा.
केसरिया, श्वेत, हरे रंगों से रंगा है,
देश की आन-बान-शान है तिरंगा..

वीरता शौर्य का प्रतीक केसरिया,
श्वेत, त्याग, शान्ति का प्रतीक है.
हरी भरी धरती, खुशहाली हरे रंग से,
तीन रंगों से सजा, है इसे कहते तिरंगा..

नीला अशोक चक्र शोभा बढ़ा रहा,
चक्र विजय, प्रगति, धर्म का प्रतीक है.
गर्व से कहते वन्दे मातरम,
जब लहराता है हमारा तिरंगा.
तीन रंगों से सजा, हैं कहते इसे तिरंगा..

*****

पहेली

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

1. शिक्षा और संस्कार के दाता.
बच्चों का है भाग्य विधाता.
चाक डस्टर से उनका नाता.
लोगों को जागरूक बनाता.

2. ऊँचे लंबे पेड़ का फल.
सब फलों से श्रेष्ठ हैं फल.
मीठे फल और मीठे जल.
नहीं हैं इन सा दूजा फल.

3. तन मन को स्वस्थ बनाता.
बीमारी को दूर भगाता.
स्वास्थ्य, निरोग तन उनको भाता.
धरती का भगवान कहलाता.

4. वन, उपवन और बाँबी में रहते.
शिव जी गले में धारण करते.
जल और थल दोनों में रहते.
नाग पंचमी में पूजन करते.

उत्तर- (1) शिक्षक (2) नारियल (3) डॉक्टर (4) साँप

*****

फुलवारी

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह

मेरी छोटी-सी फुलवारी,
हरी-भरी प्यारी प्यारी,

रंग-बिरंगे प्रसून लगे है,
हरी-हरी है इसकी डाली.
भिन्न-भिन्न मंजरी से,
महक रही है क्यारी-क्यारी.

हर क्यारी में भाँति-भाँति के,
कुसुम लगी है प्यारी-प्यारी.
कुंदपुष्प, गलेअशर्फी,
अमलतास ,चमेली ,अबोली.

नीले, सफ़ेद अपरिजाता खिले है,
मधुमालती लगती है प्यारी.
नीम चमेली, प्रातः श्री से,
सुन्दर लगती सबकी फुलवारी.

नोनिया की तो बात निराली,
सूर्य की तो यह है सहेली.
जब तक किरणें इस पर पड़ती,
खूब है इठलाती.

फुलवारी के चहुं दिशा से,
मीठी खुशबू है आती.
मेरी छोटी-सी फूलवारी,
लगती है मुझे बहुत प्यारी.

*****

चलो नौनिहालों को प्रेरित करें

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह

पाठशाला जाने को,
चलो मनाये प्रवेशोत्सव.
नयी किताबें, नया गणवेश,
नयी उमंग, नयी ऊर्जा से,
चलो फिर इस बार पढ़े,
चलो मनाये प्रवेशोत्सव..

आज भी शिक्षक निहारे अपने नौनिहालों को,
अपने ज्ञान-विज्ञान से शिक्षक,
बांटे शिक्षा नौनिहालों को,
इस कोरोना काल में बच्चों,
चलो मनाएँ ऑनलाइन प्रवेशोत्सव..

शिक्षक ज्ञान की ज्योत जगाये ,
ऑनलाइन, मोहल्ला क्लास में.
खूब पढ़े लिखे हम सब,
जग में नाम रोशन करे.
अपने और दूसरों को सुरक्षित रखकर,
चलो मनाये प्रवेशोत्सव..

*****

बीत रहा जीवन

रचनाकार- मईनुदीन कोहरी

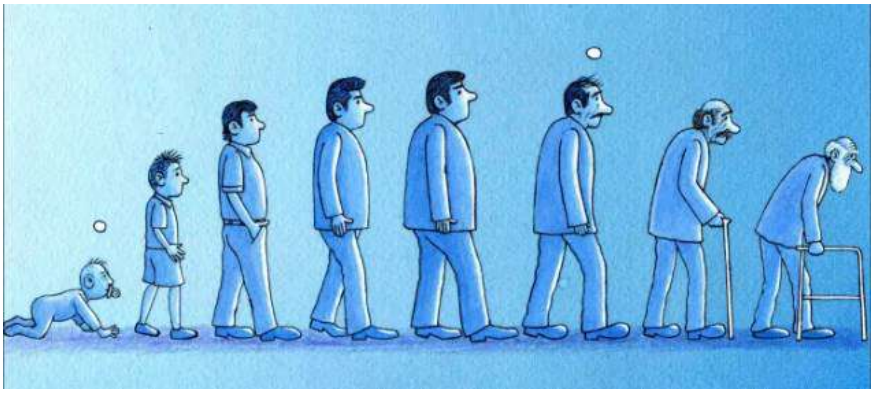

बीत रहा है जीवन सारा.
कब सम्भलेगा इन्सान रे..
प्राण-पंखेरू उड़ जायेंगे.
ले-ले तू रब का नाम रे..

अपने कर्मों का लेखा कर ले.
कब जाने कब जाना पड़े..
अपने अन्तर्मन में तू झांक.
साथ चलेंगे अच्छे काम रे..

तू जड़ से नर कैसे बना.
पढ़ जीवन इतिहास रे..
अब भी तू ना सम्भला तो.
कब जाने,कब आये,मृत्यु का पैगाम रे..

क्यूँ माया के मद-मोह में.
अंधेरों का भार यूँ ढो रहे..
खोल अब तू मन की खिड़की.
धरे रह जाएंगे,सोना गहने दाम रे..

जग में आते तू साथ क्या लाया.
खाली आया-खाली हाथ जाए रे..
पाप-पुण्य ही तेरे साथ चलेंगे.
तो फिर कब लेगा 'हरि' नांम रे..

करले जग में कुछ तो पुरुषार्थ.
यश-यौवन-धन तो भंगुर रे..
परहित-पवित्र राह तू चल.
कब ढल जाए,जीवन की शाम रे..

*****

पंछियों की दुनिया

रचनाकार- विभा सोनी

बच्चों आप सभी ने अपने आस-पास बहुत सारे पक्षियों को देखा होगा, लेकिन इनके बारे में ज्यादा नही पता होगा, तो मैं आप सभी को इस संबंध में कुछ जानकारी दूँगी. पँख वाले, या उड़ने वाले किसी भी जंतु को हम पक्षी कहते है. इनका शरीर पँखों से ढका होता है. सभी प्राणियों में पक्षी सबसे सुंदर एवं आकर्षक होते है. पक्षियों की दुनिया बहुत ही निराली है. भारत में पक्षियों की लगभग 1200 प्रजातियां पायी जाती है. क्या आपको पता है, हर साल कितने सारे पक्षी प्रदूषण के कारण अपनी जान गवां रहे हैं.

हमारे देश में इतने सुंदर, रंग-बिरंगी पक्षी है जिन्हें देखकर हमारा मन आनंदित होता है. पक्षियों का पोषण व संरक्षण हमारा कर्तव्य है, सभी को उसके लिए जागरूक रहना चाहिए. पक्षियों को बचाने के लिए हमें अपने घर के पास के पेड़ में बर्तन लटकाकर दाना रखना चाहिए. अपने आसपास पेड़ पौधे लगाएं. पर्यावरण को सुरक्षित कर पक्षियों की भी जान बचाने का संकल्प लें.

चिड़िया कहती एक ही पुकार मुझे बचाओ

मेरा ना करो संहार

*****

बेटियाँ

रचनाकार- मईनुदीन कोहरी नाचीज़ बीकानेरी

घर - घर, गाँव - गली झूलेंगे झूलें .
नन्ही-नन्ही, प्यारी - प्यारी बेटियाँ ..

झूलो के संग; बारी - बारी; झूलें .
हंसती-गाती छोटी-मोटी बेटियाँ ..

पेड़ - चौपाल पर सजेंगे; ये झूलें.
मस्त - मस्त सी इतराती बेटियाँ..

पापा-मम्मी घर-आँगन बाँधे झूलें.
रिमझिम के संग नाचे गाए बेटियाँ ..

सावन की फुहारों के आनन्द ले झूलें .
कभी खड़े-बैठे संग-संग झूले बेटियाँ ..

*****

आओ पेड़ लगाएँ

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

बच्चो, आओ पेड़ लगाएँ
फूलों-सा जग को महकाएँ.

तितली आएँ, भौंरें आएँ
हमको गीत सुमधुर सुनाएँ.

झूमे औ' पुलकित हो नाचें
ठंड़ी - ठंड़ी हवा बहाएँ.

तपे न सूरज इस धरती को
बरखा को लेकर वे आएँ.

मीठे - मीठे फल देने वें
सब बच्चों को पास बुलाएँ.

जो भी इनको काटे-तोड़े
उन्हें प्रेम से हम समझाएँ.

पेड़ नहीं तो जानो - समझो
नहीं सुरक्षित हम बतलाएँ.

*****

बेटियाँ

रचनाकार-सीमा यादव

परी बनकर नभ पर विचरण करके,
अमूल्य रहस्यों को
तलाशना चाहती हैं बेटियाँ.

क्षितिज की मिसाल बनकर,
अवनी -अंबर को एक दूजे से
मिलाना चाहती हैं बेटियाँ.

सिंधु के गहरे नीर में
मोती ढूँढ़ कर सारी सृष्टि में
बिखेरना चाहती हैं बेटियाँ.

अरमानों की ऊँची बुलंदियों को
छूने के लिए निशिदिन
जूझना चाहती हैं बेटियाँ.

'बेटों से कम नहीं'
यह सच्चाई सबको
बताना चाहती हैं बेटियाँ.

*****

कौए की चालाकी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक रोज कौए को पता चला कि कोयल उसके घोंसले में अपना अंडा दे कर चली जाती है. कौआ कोयल के अंडे को अपना अंडा समझ कर उन्हे सेते और बच्चों को पालते है. जब कोयल के बच्चे बड़े हो कर उड़ने लायक हो जाते है तो कोयल के बच्चे अपने मॉ बाप के पास चले जाते है. इस सच्चाई को जानकर सारे कौओं को बडी आत्म ग्लानी हुई. एक दिन कौए ने कोयल को अपने घर बुला कर कहा कोयल बहन अब तुम हमें मूर्ख बना कर अपने अंडे को हमसे नहीं सेवा सकती हो आज से अगर तुमने अपना अंडा हमारे घोंसले में दिया तो मैं तुम्हारे अंडे को जमीन पर गिरा कर नष्ट कर दूँगा. इसलिए कान खोल कर सुन लो आज से हमारे घोंसले में अपना अंडा देने की कोशिश मत करना वरना तुम बहुत पछताओगी. तभी कोयल बोल पड़ी,इस बात का तुम्हें कैसे पता चली कि मैं तुम्हारे घोसले में अंडा देती हूँ. इतना सुन कर कौआ बोला तुम्हें हमारे घोंसले में से अंडा देते सारे पक्षियों ने देखा है सारे पक्षियों की बात क्या झूठी है. “हाँ बिलकुल झूठी है. ”कोयल इतना कह कर वहाँ से चली गई.

कुछ दिनों के बाद कोयल के अंडे देने का वक्त आ गया. कोयल परेशान हो गई कि मैं अंडा दूँ तो कहाँ दूँ. उसे कौए के घोसले में अंडा देना नामुमकिन लग रहा था. क्योंकि कौए ने बिरादरी के लोगों को कोयल के अंडे देने की बात बता दी थी. कोयल चोरी छुपे जैसे ही अपना अंडा कौए के घोंसले में देती वैसे ही कौआ उन्हें पहचान कर जमीन पर गिरा कर नष्ट कर देता. सारे कोयल परेशान हो गए. उन्हें अपना अंडा देने की चिन्ता सताने लगी. एक रोज सारे कोयलो ने फैसला किया कि अब हमें अपना घोंसला बना कर उसमें अपना अंडा देना पडेगा और सेना भी पड़ेगा.

उस दिन से कोयल खुद अपना घोंसला बना कर उसमें अंडा देने लगीं और उसे सेने से ले कर बच्चों को पालने का काम भी करने लगीं. कौए की चालाकी के कारण सारे कौओं को कोयल के अंडे बच्चों को पालने के काम से हमेशा के लिए छुटकारा मिल गया.

*****

गुरु

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

गुरु है ब्रम्हा, गुरु है विष्णु, गुरु ही है महेश्वर.
गुरु दिव्य प्रकाश पुंज, गुरु है ज्ञान का सागर.

गुरु है पथ-प्रदर्शक, है शिष्यों के तारणहार.
माता-पिता से बढ़कर, देते हमको स्नेह अपार.

देते जीवन को सुंदर आकार, गुरु है शिल्पकार.
गीली माटी से घड़े बनाता, जैसे कोई कुम्भकार.

गुरु ज्ञान की मूरत होते, गुरु का धर्म परोपकार.
शत-शत नमन गुरु को, गुरु होते हैं खेवनहार.

*****

चिड़िया

रचनाकार- श्वेता पुष्पेंद्र तिवारी

चूं-चूं करती चिड़िया आई,
चोंच में लाई दाना.
मोर आया कौवा आया,
आया बंदर मामा.

भालू आया, चुहिया आई,
मिलकर खीर पकाई.
बड़े मजे की खीर बनी,
जंगल भर बंटवाई.

खाई मीठी खीर सभी ने
कोयल ने तान सुनाई.
भालू ने फिर नाच दिखाया,
सबने मौज मनाई.

*****

राखी भेजवा देना

रचनाकार- अंकुर सिंह

बहन राखी भेजवा देना,
अबकी ना आ पाऊंगा.
काम बहुत हैं ऑफिस में,
छुट्टी ना ले पाऊंगा.

कलाई सूनी ना रहे मेरी,
बहना याद ये रखना.
अपने भाई के पते पर,
राखी भिजवा देना.

है कोरोना संकट भारी,
मिलने ना तुम आना.
गर पूछे मेरी भांजी तो,
मेरा प्यार कह देना.

राखी पर ना आने से,
मुझसे रूठ ना जाना.
छोटा सा मनुहार है मेरा,
मुझको भूल ना जाना.

*****

चूहा, बतख और मेंढक

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक नदी के तट पर एक चूहा एक बतख ओर एक मेंढक रहते थे. तीनों में एक गहरी दोस्ती थी. तीनों एक साथ रहते और खाते-पीते थें.

एक रोज नदी तट पर कहीं से घुमता हुआ एक गेहुअन साँप चला आया.. साँप को देख कर चूहा बतख और मेढक साँप से पूछ पड तुम यहाँ किस लिए आए हो? तुम यहाँ से फौरन चले जाओ हम यहाँ पर किसी को रहने नहीं देते हैं. चूहा बतख और मेढ़क की बात सुन कर साँप बोला मैं तुम लोगो का कुछ नहीं बिगड़ूंगा. मुझे भी तुम लोग अपना दोस्त बना लो.. नहीं-नहीं हम तुम्हारे जैसे जहरीले साँप को अपना दोस्त नहीं बना सकते . तुम यहाँ से जल्दी चले जाओ.. तीनों दोस्तों एक स्वर में साँप से बोल पडे.. साँप बोला तुम लोग मुझे यहाँ कुछ दिन रहने दो अगर मैं तुम लोगों के साथ कोई धोखेबाजी या बदसलूकी की तो मुझे यहाँ कतई रहने मत देना.. साँप की बात तीनों ने मान ली.. साँप भी नदी तट पर रहने लगा..

एक रोज मेंढक नदी तट पर घुम-घुम कर कीट पतंगो को पकड कर खा रहा था उसी वक्त साँप वहाँ दौडता हुआ आया और तुरंत मेंढक को अपने मुँह में पकड़ लिया. मेंढक बोला साँप भाई यह क्या कर रहे हो? हमें छोड दो.. साँप बोला मुझे जोर की भूख लगी है मैं तुम्हें खाऊँगा. इतना सुनते ही मेंढक के होश उड गए. वह अपने दोस्त चूहा और बतख को आवाज दे कर बचाओ बचाओ चिल्लाने लगा. तभी वहाँ चूहा और बतख आ पहुंचे और साँप से बोल पड़े तुम हमारे दोस्त मेंढक को छोड दो.. साँप बोला मैं इसे नहीं छोड़ूँगा. मैं इसे खा कर अपनी भूख मिटाऊँगा. मैं तुम दोनों को भी बारी-बारी से खा जाऊँगा.. साँप भाई क्या अपना वादा भूल गए? तुमने कहा था न मैं तुम लोगों के साथ क़ोई धोखेबाजी या बदसलूकी की तो मुझे यहाँ कतई रहने मत देना.. हाँ कहा था. मगर सब झूठ बोला था.. वो तुम लोगों को मूर्ख बनाने के लिए कहा था.

बतख साँप को अपनी बातों में उलझाए रहा.. इतने में चूहा अपने दोस्त नेउर को बुला लाया. नेउर साँप की गर्दन पकड़ कर बोला अब मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूँगा.. नेउर व्दारा साँप की गरदन पकड़ते ही साँप का मुँह खुल गया और मेंढक साँप के मुँह से बाहर आ गया और बोला नेउर भाई इस धूर्त और चालबाज को जिन्दा मत छोडना इसे जान से मार डालो.. नेउर ने साँप का गला काट कर धड से अलग कर के उसे मार डाला.. साँप के मरते ही चूहा बतख और मेंढक नेउर की जय-जयकार करने लगें. फिर तीनों दोस्तों ने निश्चय किया कि आज के बाद हम किसी भी अजनबी पर तुरंत विश्वास नहीं करेंगे.. यह कहते हुए तीनों दोस्त अपने-अपने घर की ओर चल दिए.

*****

साल वन

रचनाकार- रजनी

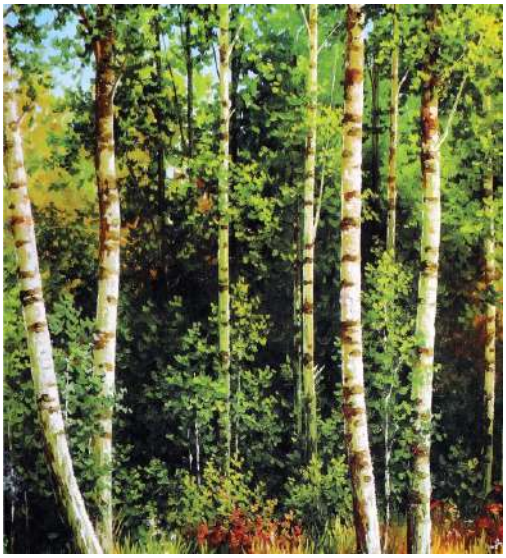

तनों की पगडंडियों पर चलती हैं ,
बूंद-बूंद अनथक बेतरतीब.

और उम्र भर जड़ों पर बोती है,
अपना अस्तित्व, माटी

लगती हैं सदियां,
बस्तर के साल को
"साल वन " बनाने में.

*****

मेरा गाँव

रचनाकार- वाणी मसीह

कितना प्यारा मेरा गाँव,
सबसे न्यारा मेरा गाँव.

याद आती वह बरगद की छाँव,
जहाँ बनाते थे कागज की नाव.

बारिश होती भीगते हम,
नाचते-कूदते छम-छमा-छम.

पानी में चलाते अपनी नाव,
स्कूल जाते मिट्टी वाले पाँव.

हल्ला करते चाँव-चाँव,
जैसे कौए काँव-काँव.

*****

माँ

रचनाकार- रीता प्रधान

महिनों तक तूने मुझको,
अपने भीतर समाया है.

माँ मैं बड़ी किस्मत वाली हूँ,
तेरी कोख में जीवन पाया है.

पकड़ कर मेरी उंगली तूने,
चलना मुझे सिखाया है.

हर पल मेरे चारों ओर रहती,
तेरी ममता की छाया है.

छोटी सी मैं गुड़िया तेरी,
मेरी चिंता तुझे सताती है.

लाख छुपा लूँ तुझसे लेकिन,
हर बात समझ तू जाती है.

जाने कैसा प्यार तेरा माँ,
कभी बड़ी ना होने देती है.

अब तो हर पल मुझको माँ तू,
हर जगह दिखाई देती है.

जग में ये अनमोल सा जो रिश्ता है,
इन्सान हुआ, कोई एक फरिश्ता है.

*****

जादुई ताला

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक लकड़हारा रोज जंगल में जाता और वहाँ सुखी लकड़ियों को लाता फिर बाजार में बेचकर अपना और अपने परिवार का पेट भरता था. लकड़हारा गरीब था ओर एक छोटी-सी मढ़ई में अपनी पत्नी और बेटी बीनू के साथ रहता था. एक रोज लकड़हारा जंगल में दूर तक चला गया. तभी उसकी नजर एक सुन्दर सी महल पर जा पड़ी. लकड़हारा जंगल में महल को देख कर हैरान रह गया. वह सोचने लगा इस जंगल में इस महल को किसने बनवाया है और इस महल में कौन रहता होगा. लकड़हारा महल को देखने के लिए उसकी ओर बढ़ने लगा.तभी महल से आवाज आई रूक जाओ लकड़हारे अगर तुमने महल में घुसने की कोशिश की तो मैं तुम्हें भी इस महल में कैद कर दूँगा.महल से आती आवाज सुन कर लकड़हारा बोला बाबा मैं एक गरीब लकड़हारा हूँ.जंगल की सुखी लकड़ियों बेच कर अपना पेट भरता हूँ| क्या आप हमारी मदद नहीं कर सकते है?

लकड़हारे की बात सुनकर महल के अन्दर से एक बूढ़ा व्यक्ति बाहर आ कर लकड़हारे से बोला बेटा मैं तुम्हारी मीठी बातों से बहुत खुश हूँ. बताओ तुम्हें क्या चाहिए. मैं एक जादूगर हूँ और तुम्हारी हर तरह की मदद कर सकता हूँ. बूढ़े जादूगर की बात सुन कर लकड़हारा बोला बाबा आप हमारी गरीबी दूर कर दीजिए. लकड़हारे की बात सुन कर बूढ़े जादूगर ने कहा बेटा महल के अन्दर जो सामने का कमरा दिखाई दे रहा है ना उसी कमरे में ढ़ेर सारे सोने चाँदी के सिक्के और हीरे जवाहरात पड़े हुए हैं.. तुम कमरे में जा कर जितना चाहो सोने चाँदी के सिक्के और हीरे जवाहरात ले जा सकते हो. उस कमरे के बाहर दरवाज़े पर एक ताला लगा हुआ है. वह ताला जादुई है वह चाभी से नहीं खुलता है उसे खोलने के लिए तुम्हें तीन बार ताले पर मुक्के से मार कर तीन बार कहना होगा खुल जा ताला खुल जा ताला खुल जा ताला कहना होगा.. अब तुम जाओ कमरे का ताला खोल कर जितना चाहो सोने चाँदी के सिक्के और हीरे जवाहरात ले जा सकते हो. लकड़हारा बूढ़े जादूगर से इजाजत पा कर महल में गया और जादूई ताला खोल कर एक बोरी में सोने चाँदी के सिक्के और जवाहरात भर कर जैसे ही कमरे से बाहर आया वैसे ही कमरा और ताला अपने आप बंद हो गया..

लकड़हारा जब वापस घर जाने लगा तो बूढ़े जादूगर ने कहा बेटा अब यहाँ कभी मत आना अगर दोबारा दौलत की लालच में यहाँ आए तो मैं तुम्हे भी अपने कैद खाने में बन्द कर दूँगा. बूढे जादूगर की बात सुनकर लकड़हारा घर की ओर चल दिया. ढ़ेर सारी दौलत पा कर लकड़हारे की सारी गरीबी दूर हो गई और वह सुख से अपना जीवन व्यतित करने लगा.

*****

जनमानस का वल्लभ मैं

रचनाकार- रजनी शर्मा

गण, सूबा संविलियन का सरदार मैं,
तुच्छ लिप्सा पर जब किया प्रहार,
जनमानस हृदय में अंकित,
प्रणज्वाला सा प्रतिकण ज्वलित मैं
धन्यभाग कर्म से नहीं कभी वंचित
मैं...

देशराग अनहद नाद में गुंजित,
धरा मंच का पात्र बन मंचित,
जनमानस पटल में केसरी चित्रित
मैं...

किंचित भी नहीं चिंतित मैं,
देशप्रेम है स्वयं सिंचित,
मातृभूमि के कण-कण में चिह्नित,
देश धमनी के लहू में सदा संचित
मैं...

गत आगत से नहीं हूं विगलित,
वर्तमान के प्रतिक्षण में पुलकित
भविष्य राग हो जब भी किलकित
प्रस्तुत रहूँगा बन शाश्वत नवगीत
मैं...

प्रलय विखंडन के प्रपंच से,
खण्डित जन को कर एक मैं,
ऊंगली शीर्ष पर थामा गिरी गर्जित
भारत मानस का सरदार वल्लभ
मैं...

*****

मित्र

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

सुख-दुख के साथी सदा, बचपन के वो यार.
खेल खेलते साथ में, रखते अनुपम प्यार..

मिलते हैं जब मित्र से, करते रहते बात.
बात खत्म होती नहीं, बीते सारी रात..

हरकत बचपन की हमें, रह जाती है याद.
बैठे सारे साथ में, याद बढ़ाती स्वाद..

ऐसा मित्र बनाइए, हो जिस पर विस्वास.
सुख- दुख सबको बाँटता, होता है वह खास..

*****

मेरा देश

रचनाकार-प्रतिभा त्रिपाठी

मेरा देश महान है,
हम सबकी शान.
इसकी रक्षा के लिए
दे देगें हम जान.

ऐसा मेरा देश है,
जहाँ दिखे हर रंग
जात-पात के भेद से,
ऊँचा सबका संग.

प्रेम रंग से है भरा
प्यारा मेरा देश.
वीर सपूतों ने दिया
अर्पण का संदेश.

*****

जानव जनऊला

रचनाकार - कन्हैया साहू 'अमित'

1. नइ तो आवय येहा हाथ.
रहिथे फुलुवामन के साथ..
रिंगी-चिंगी पाखी संग.
रस पी के इन फिरय मतंग..

2. भनभन-भनभन करथे खूब.
फुलवा मा इन जाथे डूब..
बिरबिट करिया एखर रंग.
कान करा करथें उतलंग..

3. रहिथें जुरमिल छाता डार.
रानी संगे सौ बनिहार..
चुहक-चुहक रस मैंद सकेल.
गुरतुर मधुरस ठेलम-ठेल..

4. चीं चीं चीं चहकैं चिरबोर.
रुखराई, घर, अँगना खोर..
पंख पसारै फुर्र उड़ाय.
सबके मन ला नँगते भाय..

5. बहुते खबड़ा खाँवे खाँव.
बोल उराठिल काँवे काँव..
करिया-करिया एखर रंग.
उटपटांग उज्जट उतलंग..

6. बइठे रहिथे आमाडार.
कुलकै भारी कुहकी पार..
जब बसंत के आवय बेर.
तब तो बहुते पारय टेर..

7. हरियर पाँखी लाली चोंच.
समझदार कस एखर सोंच..
मिरचा देखत जावय डोल.
तपत कुरू के बोलय बोल..

8. पींयर खैरा भुरवा रंग.
राखय मनखे अपने संग.
मिट्ठू के होथे लगवार.
नाँव बतावव एखर यार..

9. घपटे देख घटा घनघोर.
नाचय नँगते मया चिभोर..
पंछी के राजा कहलाय..
अपने पँउरी देख लजाय..

10. सादा करिया भुरुवा रंग.
खेलँय खावँय मनखे संग..
पहिली इन चिट्ठी पहुँचाय.
गजब गुटरगूँ बोल सुहाय..

उत्तर- 1. तितली, 2. भौंरा, 3. मछेर, 4. बाम्हन चिरई, 5. कौआ, 6. कोइली, 7. मिट्ठू, 8. मैना, 9. मँजूर, 10. परेवा

*****

मौन

रचनाकार- शाहरुख़ खान

सोचती हूँ मौन,
किसका करूँ मोल,
क्या है अनमोल?

आवाज़ आती है,
खुद का कर मोल,
तू ही है अनमोल.

यही एक सच्चाई है,
यूँ न भटक कहीं,
हर जगह गहराई है.

खुद पर भरोसा कर,
तू ही अपना उजाला,
तू ही अपनी परछाईं है.

*****

हिंदी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

जन-गण का सम्मान है हिंदी,
भारत का अभिमान है हिंदी.

सजी हुई रस - अलंकार से,
छंदों का उद्यान है हिंदी.

उर-वीणा को झंकृत करती,
गायन, सुमधुर तान है हिंदी.

संस्कृत की प्यारी-सी तनया,
संस्कृति की मुस्कान है हिंदी.

संतों-कवियों की शुचि वाणी,
वीरों का बलिदान है हिंदी.

अपनी भाषा, अपनी बोली,
राष्ट्रधर्म पहिचान है हिंदी.

भावामृत से पूरित गागर,
धरती का जयगान है हिंदी.

सहज-सरल मोहक शब्दों में,
ज्योतिर्मय विज्ञान है हिंदी.

*****

बाल कविता

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

खुशियों भरा नजारा है...

सूरज तो अंगारा है,
उससे ही उजियारा है.

चंदा दे चांदनी धवल,
सबका राज दुलारा है.

तारे चमकें नित नभ पर,
खुशियों भरा नजारा है.

हवा संग घूमे नभ पर,
बादल तो बंजारा है.

पंछी उड़ते जाते हैं,
आसमान घर सारा है.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ.कमलेंद्र कुमार

1. ऐसा तरल निराला हूँ,
प्यास बुझाने वाला हूँ.
मेरा कोई रूप नहीं हैं,
मेरी कोई गंध नहीं है .
स्वाद मेरा ढूढ़ ना पाओ,
झट से मेरा नाम बताओ.

2. हरे पौधे बड़े निराले,
हमें ऑक्सीजन देने वाले .
अपना भोजन स्वयं बनाएँ,
झट बतलाओ क्या कहलाएँ?

3. तीन अक्षर ऐसे आएँ,
मिल आकृति एक बनाएँ.
उद्भव मेरा सब कोई जानें
अंत मेरा पर कोई ना जाने.

4. मुझको कोई नाप ना पाये ,
दोनों ओर से बढ़ती जाऊँ .
एक आकृति मुझको समझो,
झट बतलाओ क्या कहलाऊँ.

5. चार अक्षर ऐसे हैं आते,
रेखा का भाग कहलाते .
बोलो बच्चो उसका नाम,
झट बतलाओ उसके काम.

6. तीन अक्षर का विषय निराला,
नाम बताओ प्यारे लाला.
सुनकर बच्चे चकराएँ,
लेकिन रोचकता भी पाएँ.

उत्तर- 1. जल, 2. स्वपोषी पौधे, 3. किरण, 4. रेखा, 5. रेखाखण्ड, 6. गणित

*****

हिन्दी भाषा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

सरल, सहज और मीठी भाषा,
बहु प्रचलित और श्रेष्ठ भाषा.

हम सब की प्रिय यह भाषा,
हिन्दी हमारी राष्ट्र-भाषा.

साहित्य का श्रृंगार है हिन्दी,
मीरा, सूर की भाषा हिन्दी.

मैत्री की भाषा है हिन्दी,
राष्ट्र की गौरव गाथा हिन्दी.

पढ़ते हिन्दी,लिखते हिन्दी,
सुनते और समझते हिन्दी.

हमारी शान है भाषा हिन्दी,
तुम पर है अभिमान हिन्दी.

*****

Rhymes

Poet- Aaradhana Priyadarshani

Do you help someone in need?
Do you try to come out with the swamp of greed?
Are you aware about the root cause of crimes?
Are you free from the distinction of caste, colour and creed?

Can you feel the pain of others?
Can you protest against the evils intrude?
Why are you careless about corruptions occurring?
Why are you so selfish and rude?

We make ruthless comments for others,
Why do you want a mirage to be true?
You never understand the torment of delinquency;
Until the victim literally isn't you.

We want to enjoy the enthusiasm of life,
We want to obtain all joy and zest,
But you dominate the helpless entities;
Who gave you the permission to arrest?

We talk about fidelity and mercy;
But we have nothing to spread and show,
Why inside our conciousness we allow
the negativity to sustain and grow?

We crave to eat delicious food,
We long to fly like independent, boundless birds;
Humanity should be visible in our deeds,
It shouldn't be limited to the words.

Have faith in the existence of almighty,
Believe in his immortal divinity,
Try to understand and implement,
The true meaning of love and charity.

What you give comes back
Is mentioned even in the law of gravity,
Then how do you date to forget,
The inherited nature of humanity.

Don't lose yourselves,
In the maze of vanity,
Try to feel the ooze of mercies,
Try to be a human being and follow humanity.

*****

सूरज

रचनाकार- अजय कुमार यादव

रोज सवेरे आकर हम सबको जगाता है
चारो ओर देखोअपना प्रकाश फैलाता है..
दिन-दुनिया की समझ हमारी यह बढ़ाता हैं,,
सूरज हम सबको संघर्ष करना सिखलाता है..

ठंड के मौसम में रहता है इसका इंतजार,,
गर्मी के मौसम में ये करता है अपना प्रहार..
करोड़ों वर्षों से है दुनिया में ये प्रकाशमान
हम तो मानते हैं सूरज को अपना भगवान..

धरती पर सूरज है जीवन का मूल आधार,,
यहाँ पर है जीव जंतु ,पेड़-पौधे नानाप्रकार..
बड़ी मुश्किल होगी धरती पर जीवन का आधार,,
सूरज ना रहा तो दुनिया में हो जायेगा अंधकार..

*****

राखी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

कितना सुंदर है यह रिश्ता,
दिल से सभी निभाते हैं.
भाई-बहन दोनों मिलकर,
गीत खुशी के गाते हैं..

मीठे-मीठे पकवानों की
महक घरों से आती है.
बच्चों के सँग दादी अम्मा,
बैठ साथ में खाती है..

सुबह सबेरे उठकर बहना,
सुंदर थाल सजाती है.
चंदन बंदन कुमकुम टीका,
भैया माथ लगाती है..

बाँध कलाई रेशम डोरी,
कितनी खुश हो जाती है.
रक्षा करना मेरे भैया,
मीठा बहन खिलाती है..

हर वचनों को पूरा कर के,
वादा सभी निभातें हैं.
अपनी छोटी-सी बहना को,
सब उपहार दिलाते है..

*****

वन की देवी

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

एक गाँव में सोनू और मोनू दो मित्र रहते थे. दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे. साथ- साथ खेलते थे, कहीं भी जाते तो साथ ही जाते थे.

एक दिन दोनों मित्र घुमने निकले, चलते-चलते वे जंगल की तरफ बहुत दूर निकल गए. रास्ता सुनसान था, न कोई इंसान न कोई जानवर. झिंगुर और कीड़े- मकोड़ों की आवाजें सुनाई दे रही थी. तभी जंगल में अचानक किसी की रोने की आवाज सुनाई दी. पास जाकर उन्होंने देखा कि एक सुंदर सी लड़की अपने मुंह पर हाथ रख कर जोर - जोर से रो रही है.

मोनू ने उनसे पूंछा- आप क्यों रो रही है ? इस सुनसान जंगल में आप अकेले क्यों रो रहीं हैं ?

लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया.

इस बार मोनू ने उसे चुप कराते हुए कहा- आपको क्या तकलीफ है? कृपा करके हमें बताइये, हम आपकी मदद करना चाहते हैं.

लड़की ने कहा जाओ! बच्चों घर लौट जाओ! तुम लोग अभी बच्चे हो, मेरी मदद नहीं कर सकोगे. सोनू और मोनू कुछ देर वही खड़े होकर सोचने लगे, हमें इनसे क्या मतलब? हम लौट जाते हैं.

फिर सोनू और मोनू सोचने लगे- नहीं! नहीं! हमें इस तरह से किसी मुसीबत में फंसे इंसान को छोड़कर नहीं जाना चाहिए.

सोनू और मोनू - आप हमें जब तक नहीं बताएंगे, तब तक हम यहाँ से घर वापस नहीं जाएंगे. कृपया हमें बताइये, आप क्यों रो रही है ?

लड़की ने कहा - ठीक है, चलो मेरे साथ!

ऐसा कहकर, सोनू और मोनू को एक कुएं के पास ले आई और कहा - इस कुएं में मेरी बेशकीमती हीरे की अंगूठी गिर गई है और मैं उसे निकाल नहीं पा रही हूँ. अगर अंगूठी के बिना मैं घर जाऊंगी तो मेरी माँ मुझे बहुत मारेगी. कूंआ बहुत गहरा और अंधेरा है.

सोनू ने कहा - आप चुप हो जाइए हम आपकी मदद करेंगे. ऐसा कहकर सोनू और मोनू झट से एक पेड़ से लिपटा हुआ बेल लेकर आए. बेल को कुएं में लगे लोहे के राड से बांधकर -दोनों एक के बाद एक नीचे उतर गए परंतु उन्हें कोई भी अंगूठी दिखाई नहीं दिया.

अंधेरे कुएं में दोनों का दम घुटने लगा. सोनू-और मोनू को कुछ समझ नहीं आ रहा था. दोनों हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना करने लगे. तभी वही लड़की अचानक कुएं के अंदर आ जाती है और वनदेवी के रुप में प्रकट होकर कहती है - सोनू और मोनू, तुम दोनों बहुत नेकदिल और ईमानदार हो. मैं वन की देवी हूँ, मैं तुम दोनों से बहुत प्रसन्न हूँ.

वनदेवी दोनों को एक- एक हीरे की अंगूठी देती है और कहती है- जाओ! इस अंगूठी को अपने उंगली में धारण करोगे, तो तुम दोनों को अद्भुत शक्ति प्राप्त होगी, और जो भी लाचार, असहाय है दुनिया में उन सबकी मदद करो.

ऐसा कहते ही वह अंतर्ध्यान हो जाती है, दोनों मित्र घर लौट आते हैं और उस दिन से लोगों की मदद करने लगते हैं.

*****

माँ की ममता

रचनाकार- यक्ष चंद्राकर

माँ बड़ी प्यारी होती है ,
जग मे सबसे न्यारी होती है.

माँ की ममता करुणा न्यारी ,
जैसे दया की चादर .

शक्ति देती नित हम सबको ,
बन अमृत का गागर .

ममता का सागर है माँ ,
अम्बर सा माँ का अवतार .

त्याग मूर्ति है प्रकृति सी ,
धरती सी माँ का प्यार .

ईश का अवतार तु ही ,
तु ही जीवन का आधार .

उपकार तेरा मुझ पर है ,
करूँ मैं तेरी जय जयकार .

माँ का आँचल खुशियों की फुलवारी ,
माँ की ममता है अपार.

माँ के चरणों मे आनंद की किलकारी ,
इनसे ही सबका सपना साकार.

*****

आने वाला पाँच सितम्बर

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव

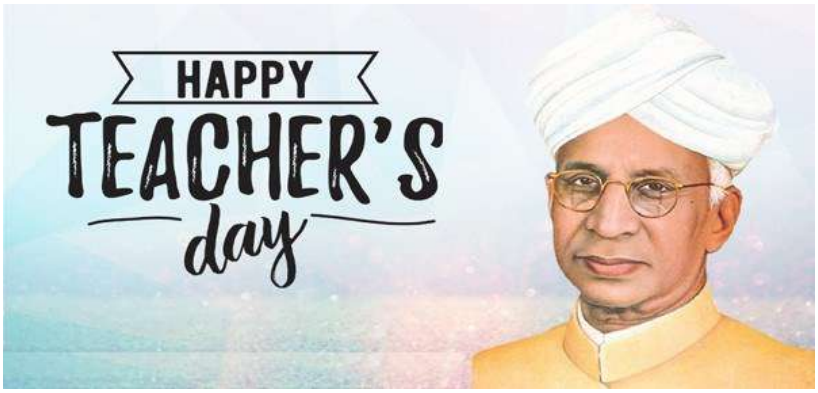

सुनो सुनील सुनो पीताम्बर
आने वाला पाँच सितम्बर.
हम यदि विद्यालय जाएँगे
शिक्षक दिवस मना पाएँगे.

श्री राधाकृष्णन के फोटो पर
फूल चढ़ाएँगे खुश होकर.
सारे शिक्षक भी आएँगे
हमें देख कर खुश हो जाएँगे.

*****

चंदा मामा

रचनाकार- रीमा ठाकुर

चंदा मामा बड़े सलोने.
मम्मा के वो भाई है..
शीतलता देते हैं सबको.
जैसे हवा पुरवाई है..

सूरज चाचा से है डरते.
दिनभर छुपकर रहते हैं..
सूरज चाचा के जाते ही.
आसमान में डटकर रहते हैं..

तन पर उनके वस्त्र नहीं है.
धवल-धवल से रहते हैं..
अबकी एक वस्त्र सिलवा माँ.
माँ से लडते रहते हैं..

माँ उदास फिर हो जाती है.
और शिकायत करती है..
हर दिन घटता बढ़ता है तू.
मन ही मन है मुस्काती..

मेरी गल्ती क्या है इसमें.
मैं तो घटता बढ़ता हूँ.
सब बच्चों का मामा हूँ मैं.
सबके दिल में रहता हूँ..

*****

पेड़ हमारे दोस्त

टिंकू नाम का एक छोटा बच्चा था. वह हमेशा टीवी में कार्टून या मोबाइल में कार्टून देखता रहता था. पापा-मम्मी के बहुत समझाने के बाद भी टिंकू घर के अंदर ही टीवी में कार्टून देखता रहता था. एक दिन स्कूल में टिंकू की शिक्षिका ने पेड़ हमारे दोस्त नामक पाठ पढ़ाया, जिसमें टिंकू को पेड़ों के महत्व की जानकारी मिली कि पेड़ हमारे लिए कितने उपयोगी हैं?

पेड़ों की वजह से हमें ऑक्सीजन मिलता है, पेड़ों की वजह से बारिश होती है, गर्मी के समय में पेड़ों के नीचे कई लोग बैठ कर आराम कर सकते हैं. पेड़ों में कई पक्षियों के घोंसले होते हैं, रात के समय पक्षी आकर वहाँ रहते हैं, पेड़ों में कई प्रकार के पक्षी निवास करते हैं. पेड़ों की जड़ों के कारण मिट्टी का जमाव होता है. शिक्षिका ने बहुत ही अच्छे ढंग से पेड़ों के महत्व के बारे में बच्चों को बताया और सभी बच्चों से कहा क्या आपके घर के पास भी पेड़ हैं? क्या आप कभी अपने उस पेड़ के पास जाकर खेलते हैं? टिंकू ने सोचा कि हाँ, मेरे घर के पास भी एक बड़ा-सा आम का पेड़ है लेकिन मैं वहां कभी नहीं गया. फिर टिंकू ने तय किया कि मैं उस आम के पेड़ के पास जरूर जाऊंगा और जब टिंकू वहाँ गया तो उसने देखा कि आम के पेड़ के पास एक छोटा-सा कुत्ता बैठा हुआ था और पेड़ में बहुत सारे पक्षी थे. उनकी आवाज बहुत अच्छी लग रही थी और एक छोटी गिलहरी भी पेड़ में यहाँ से वहाँ कूद रही थी. अब टिंकू रोज स्कूल से आने के बाद घर में कार्टून नहीं, बल्कि उस पेड़ के नीचे जाकर खेलता था, कुछ पढ़ता था. उसे देखकर टिंकू के दोस्त मोना, विजय, लक्की, रुचि, गोल्डी भी रोज खेलने को आते थे और सभी बच्चे बहुत मजे करते थे. पेड़ में विजय और गोल्डी ने मिलकर एक मचान भी बनाया था, जहाँ वे ऊपर बैठ जाया करते थे और चिड़ियों, पक्षियों को बहुत पास से देखते थे. पक्षियों के लिए छोटे-छोटे घर भी बनाए थे. वहीं गिलहरी एक डाल से दूसरे डाल में घूमती रहती थी, रंग बिरंगी तितलियाँ आती थी. मोना, लक्की, रुचि पेड़ में चढ़कर छलांग लगाते रहते थे. विजय ने एक टायर से झूला भी बनाया था जिसमें सभी बच्चे झूला झूला करते थे और टिंकू नीचे बैठकर कहानी सुनाता था और सभी

बच्चे पेड़ों के चारों तरफ खेलते हुए कहानी का आनंद लेते थे. कभी-कभी स्कूल का होमवर्क भी साथ मिलकर खेल-खेल में पूर्ण कर लेते थे.

टिंकू के मम्मी, पापा और सभी बच्चों के मम्मी पापा बहुत खुश हैं कि बच्चों ने पेड़ों के महत्व को समझा और प्रकृति के महत्व को जाना है.

*****

तितली

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

गुनगुन-गुनगुन गाती तितली.
फूलों पर मंडराती तितली..

बैठ फूल के कानों पर यह.
गुपचुप बात बताती तितली..

रंग-बिरंगे पंख पसारे.
फुर्र-फुर्र उड़ जाती तितली..

कितनी सुन्दर कितनी प्यारी.
बच्चों को ललचाती तितली..

अथक परिश्रम करना हमको.
सबको ये सिखलाती तितली..

कर्म नहीं तुम अपना छोड़ो.
मन में आस जगाती तितली..

*****

फलों की संख्या

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

एक आम और दो थे केले.
तीन नीबू इनसे आ मिले ..

इनके मेहमान बने सेब चार.
और फिर मिले पाँच अनार..

छः अमरूद का हुआ आगमन.
सात अंगूर भी आए बन-ठन..

आठ संतरों को मिली खबर.
नौ चीकू को आ जाएँ लेकर..

दस पपीते ढूँढते आए.
ठहाके फिर खूब लगाए..

बच्चो! जरा दिमाग लगाओ.
कितने फल हैं तुम बताओ..

*****

टोकियो ओलम्पिक प्रदर्शन

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

होते हैं हर चौथे साल में, ओलम्पिक के खेल.
शान्ति,प्रेम व सद्भावना, का दिखता यहाँ मेल..

सात पदक हासिल किए, हम सप्तऋषी के लाल.
ओलम्पिक में आज तक, का सबसे बड़ा है कमाल..

एक स्वर्ण सहित दो रजत और कांस्य पदक हैं चार.
मेडल वीरों का हुआ, देश खड़ा करने को सत्कार..

नीरज चोपड़ा भाला फेंक में, किए गजब कमाल.
स्वर्ण पदक जीतकर, किया सबका ऊँचा भाल..

कुश्ती में रवि दाहिया, रजत पदक लिया है जीत.
गूँज उठा आज जगत में, जन-गण-मन का गीत..

महिला भारोत्तोलन में गई, मीराबाई चानू भी छा गई.
रजत पदक जीतता देखकर, सकल जग चकरा गई..

पी .वी .सिन्धू ने किया, कांस्य पदक देश के नाम.
विश्व बैडमिंटन संघ करे, इनको नमन व सलाम..

मुक्केबाज लावनिया पर है आज,पूरे देश को नाज.
कांस्य पदक विजेता बन गई, चकित होते मुक्केबाज..

कुश्ती में बजरंग पुनिया ने, किया अनोखा काम.
दिल जीता, कांस्य पदक भी, किया देश के नाम..

पुरुष हॉकी में हमने लिया, कांस्य पदक को जीत.
आज हमको याद आने लगा, अपना गौरवपूर्ण अतीत..

महिला हॉकी में भी खेल दिखाई हैं हमने दमदार.
हुई कांस्य पदक के वास्ते, चार तीन से करीबी हार..

मातृशक्ति को बारम्बार नमन, तुम हो बहुत विशेष.
गर्व कर रहा आप पर, हर्षित होकर आज पूरा देश..

*****

गेड़ी

रचनाकार- द्रोणकुमार सार्वा

आज बिहनिया ले गोलू के मन उछाह ले भर गे रहिस. बबा के संग नांगर-बखड़,कुदारी,रापा ल धो के घर म हरेली तिहार के पूजा पाठ के तैयारी म लगे रहिस. परोसी लईका मन के हाथ म गेड़ी ल देख नान-नान दु ठन लउठी ल धर के बबा तीर गेड़ी बनाये बर जिद करे लगिस.

ननपन म लईका मन के मन जल्दी संगी सँगवारी अउ खेल कूद डाहर खिंचा जाथे. गोलू के बात ल बबा भला कइसे टालतिस वो तो बबा के मयारुक संगी रहिस. "बुढापा ननपन के डहर मनखे के ढलत बेरा आय. घर के कतको कड़ा सुभाव के मनखे घला नाती-नतनीन बर खेलउना कस बन जाथे. "

बबा ह बॉस के दु ठन लउठी ल लेके गेड़ी बनाये के चालू करीन. गोलू के मन में गेड़ी ल देख सवाल के ज्वार उमड़त रहिस. बबा ले पूछत कहिथे:-

बबा हरेली बर गेड़ी काबर बनाथे.

बबा बताइस बाबू ये हमर पुरखा ले चले आवत हे. आघु गली खोर मन म माड़ी-माड़ी चिखला रहय ल इही गेड़ी म चढ़ के हमन ननपन म चउमास म घुमन.

बबा गोलू ल बतावत कहिस रापा,कुदारी,नांगर-बखड़, गऊ धन ये सब ह खेती म हमर मन के सहायता करथे तेकर सेती हमन इकर पूजा करके इकर उपकार ल मानत माटी महतारी ले बने फसल बर कामना करथन.

बबा बताइस गउधन ल गहूं के पिसान म जड़ी मिलाके लोंदी बनाके खवाय ले उकर स्वास्थ्य ह बने रइथे.

नाती बूढा के गोठ बात होवत रहिस अइसने घर के मोहाटी म बईगा ह लीम के डारा ख़ोचीस. बबा गोलू ल बताथे. लीम के रुख ह बड़ गुणकारी आवय एकर जर ले लेके पाना ह रोग राई म काम आथे अउ घर म ठंडकता अउ सफाई म बड़ सहायक होथे.

चौमास म जुड़ -बुखार,रोग -राई ले बचे बर हमर तीर-तखार के सफाई जरूरी हवय. ए परब हमन ल इहि सन्देश देथय.

बबा रुख-राई हमन के कतिक काम आथे बबा फेर सब मन एला काबर काटथे? गोलू के प्रश्न म पर्यावरण के पीड़ा रहिस.

आज के मनखे अपन सुवारत म भुलागे हे बेटा -बबा कहिस.

बेटा इहि रुख-राई ह बादर ल अपन तीर खींच के बरसा कराथे. अब सावन भादो म पानी नई गिरत हवय एकरे तो नतीजा आय.

हमर जिनगी ये माटी महतारी ,रुख-राई अउ पर्यावरण के बिरले नई हे.

हरियर धरती के सुवागत अउ धरती ल हरियर राखे बार हमन ल सन्देस दे बर त ये हरेली तिहार हमर पुरखा मन मनावत आहे.

बबा के बात सुनत गोलू माटी महतारी अउ पर्यावरण के सुरक्षा बर मने मन सोचत रहिस. गेड़ी बन गे. पूजा पाठ करे के बाद नाती-बूढा आमा के पेड़ लगाइस.

फेर गुरहा चीला, चौसेला, सोहारी,बरा,गुलगुला भजिया के सुवाद लेके गेड़ी चढ़े के मजा लीन.

*****

दिल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

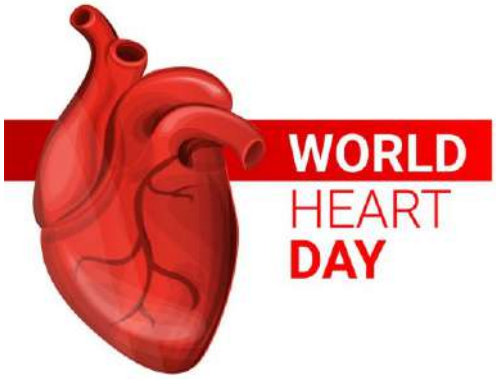

दिलों से दिलों के तार जोड़ता है दिल,
हर खुशी, हर गम को बया करता है दिल.
लोगों की यातना देखा पिघल जाता है दिल,
खुशियों की लिए हरपल इबादत करता है दिल.

होंठों पर मुस्कान की वजह है दिल,
आँखों में आंसू की वजह है दिल.
कभी बचपन, तो कभी पचपन का होता है दिल,

सुख में खुशियों का इजहार करता है दिल,
दुःख में खुदा को फरियाद करता है दिल.
मुश्किलों में हर दम साथ देता है दिल,
हमारे ज़िंदा होने का सबूत देता है दिल.

*****

नन्ही गुलाब

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

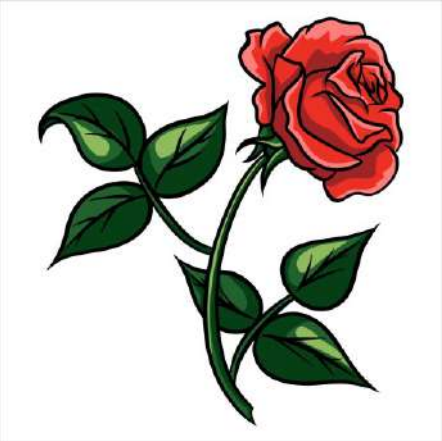

बागों की सौंदर्य बढ़ाती,
चारों ओर खुशियाँ फैलाती,

जीवन में उत्साह जगाती,
मुश्किलों में जीना सिखाती
सुंदर सी एक नन्ही गुलाब.

काँटों से वो खुद को बचाती,
लाल,पीले रंगो में भाती,

भौंरे फूलों का रस लेती
गीत खुशी की वो है गाती
सुंदर सी एक नन्ही गुलाब.

चुन-चुन कर कलिया लाती,
धागा में पिरोई जाती,

प्यार का संदेशा देती ,
सब का मन मोह लेती,
सुंदर सी एक नन्ही गुलाब.

धीरे-धीरे कलियों बढ़तीं,
कलियों से जब गुल खिलतीं,

गुलों से गुलदस्ता बनती,
घर आँगन महक उठती
सुंदर सी एक नन्ही गुलाब.

*****

सीखें

रचनाकार- भोलाराम सिन्हा

भारत के वीरों से संघर्ष करना सीखें.
अपनी पावन धरती के लिए बलिदान करना सीखें.

देश को आजाद कराने के लिए अनेकों वीर शहीद हुए.
ऐसे वीर शहीदों का सम्मान करना सीखे.

अपने लिए जिये,तो क्या जीये यारो.
दीन दुखियों का सहारा बनना सीखें.

हम भारत के और भारत हमारा .
बाती की तरह जलकर प्रकाश करना सीखें.

*****

सुरता

रचनाकार- तुलस चंद्राकर

मया-पिरित के धार बोहावत
घेरी- बेरी गोहरांव रे,
गुरतुर बोली -भाखा जेखर
अब्बड़ सिधवा मोर गांव रे .

जेकर चिन्हारी धुर्रा-माटी
चिखला, छानही - परवा हे,
डोली - धनहा, मुही- पार अउ
तरिया, डबरा, नरवा हे.
अंतस ल जुड़ाथे जेहां
रुखराई के छांव रे,
गुरतुर बोली - भाखा जेखर
अबड़ सिधवा मोर गांव रे.

अंगना म अटकन - बटकन
रेंहचुल, भंवरा- बांटी हे,
गिल्ली- डंडा अउ फूगड़ी म
लइका अड़बड़ खांटी हे.
बरसत पानी के रगड़ म
जिहां बोहाथे नाव रे,
गुरतुर बोली - भाखा जेखर
अबड़ सिधवा मोर गांव रे

होत बिहनिया चले नगरिहा
जांगर टोर कमावत हे,
खेत में चटनी -बासी के संग
ज़िनगी ल अपन चलावत हे.
धरती दाई के जतन करइया
जेखर पखारंव पांव रे,
गुरतुर बोली -भाखा जेखर
अब्बड़ सिधवा मोर गांव रे.

मोर कुरिया म किसम-किसम के
तिहार बार मनावत हें,
ठेठरी- खुरमी, बरा - सोंहारी
खावत अउ खवात हें.
कोरा हे मोर सरग बरोबर
लेथे दुनिया नाव रे,
गुरतुर बोली -भाखा जेखर
अब्बड़ सिधवा मोर गांव रे.

निबल - पातर मनखे के संग
हावय मोर मितानी,
खोरबहरा अउ मंगलू, चैतू
करथे इहां सियानी.
"सुरता" करके दया - मया के
करथे कउवां कांव रे,
गुरतुर बोली -भाखा जेखर
अब्बड़ सिधवा मोर गांव रे.

*****

जंगल

रचनाकार- श्वेता पुष्पेंद्र तिवारी

चूं-चूं करती चिड़िया आई,
चोंच में लाई दाना.

मोर आया कौवा आया,
आया बंदर मामा.

भालू आया चूहा आया,
सबने मिलकर खीर पकाया.

भालू ने उसे आकर खाया,
खा कर उसने गीत सुनाया.

मोर ने अपना नाच दिखाया,
सब ने मिलकर मौज मनाया.

*****

शांति की तलाश

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

शांति की चाहत तो सब करते हैं जीवन मे.
पर खुद शांत कभी नहीं रहते.
कैसे होगी इस धरा पर शांति,
जब सबके मन में बसा अशांति ही अशांति.

शांति तो मृग का कस्तूरी हो गया.
है सबके अंदर पर पाता कोई नहीं.
सब इसकी तलाश में भटक रहे हैं दर -बदर.
पर यह बाहर कहां यह तो है अपने भीतर.

दो पल चैन से तो बैठो जरा सा मुस्कुरा कर देखो
देखो तो जरा आपके भीतर कितनी शांति है.

दो पल बस दो पल उस परमात्मा को याद करो.
उससे ज्यादा अपने दिल की बात करो.
देखो तो कितनी शांति है तुम्हारे भीतर.

देखो तो दरवाजे पर कौन आया है.
शायद किसी को आपकी मदद की जरूरत हो.
उसकी जरा मदद तो करो.
महसूस करो फिर जी भरकर शांति.

कितना सुख है इस देने में.
जितना देते जाओगे उतना पाते ही जाओगे.
जितना दे सकते हो दो.
फिर देखो कैसे मिलती है शांति.

किसी रूठे को मनाओ.
किसी दुखिया को हंसाओ.
किसी गिरे हुए को उठाओ.
फिर महसूस करो कितनी सुलभ हैं शांति .

तलाश है तुम्हें और किस शांति की.
हर वो चीज जों तुझे सुकून दे.
सब कुछ तो तेरे पास हैं.
तुझे तलाश है और किस शांति की.

शांति चीजों को इकट्ठा करने से नहीं मिलती हैं.
यह तो जितना बांटो उतनी ही हमें मिलती हैं.

रुको तो जरा दो पल जरा सोचो तो.
मृग बने क्यू बन बन फिरते हो.
जिस कस्तूरी की तलाश हैं तुम्हे वह शांति तो तुम्हारे ही भीतर हैं.

इस भागमभाग की दुनिया में दो पल ठहर कर नहीं देखा.
बच्चों के चेहरे को जरा प्यार से तो देखो.
कितनी निश्चल मुस्कान है उनकी.
क्या वहां नहीं दिखती आपको शांति.

बूढ़े मां बाप के कमरे मे जाकर हाल तो पूछो.
फिर उनकी आंखों में झांककर देखना.
अहसास तो करो कैसी होती हैं शांति.

थकी हुई पत्नी का जरा हाथ तो बताओ.
देखना फिर कैसी होती हैं शांति.

थके हुए पति को एक प्यारी सी मुस्कान तो दो.
फिर देखो उस थके हुए पति के चेहरे पर शांति.

जीवन में कहां नहीं है शांति.
फिर क्यों हम इधर से उधर.
जाने क्यों दरबदर.
ढूंढते फिरते हैं शांति शांति.

*****

शिक्षा

रचनाकार-प्रीतम कुमार साहू

क, ख, ग, घ, ड़, अक्षर,
पढ़ लिखकर हम बनेंगे साक्षर.

शिक्षा बिन जीवन अधूरा,
लगते जैसे कागज कोरा.

शिक्षा और संस्कार का नारा,
सफल बनाता जीवन हमारा.

शिक्षा लेकर जीवन सँवारा,
बन गया लोगों का वो प्यारा.

शिक्षा से अशिक्षा हारा,
सब लोगों का शिक्षा सहारा.

शिक्षा धन अनमोल है यारा,
कर ना सके कोई बटवारा.

शिक्षा से जो करता किनारा,
दर-दर ठोकर खाता बेचारा.

*****

औलाद

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

शादी के 25 साल बाद भी संतान न होने का दर्द सह रहे राजेश और मीना; लोगों के तानों और पारिवारिक कलह से तंग आकर गाँव से दूर शहर में बसने का निर्णय लेते हैं.

शहर में लोगों से दूर एकांत जगह में राजेश और मीना किराए के घर में रहने लगते हैं.

संतान प्राप्ति हेतु वे शहर में डॉक्टर से इलाज कराने लगते है, समय धीरे-धीरे बीतने लगता है और वो खुशियों वाला दिन आ ही जाता है . जब राजेश और मीना के घर आँगन बेटे की किलकारी से गूँज उठती है. वे बेटे का सुंदर सा नाम सूरज रखते हैं.

सूरज माँ-बाप के लिए आँखों का तारा था. उसे वे खूब लाड - प्यार करते और अपने नजरों से कभी दूर न होने देते. मानो माँ बाप के लिए सूरज ही जिंदगी थी.

सूरज धीरे-धीरे बड़ा होने लगा प्राथमिक शिक्षा पास के स्कूल में ग्रहण कर उच्च शिक्षा हेतु शहर जाने लगा. सूरज पढ़ाई में अव्वल था. उसने गणित विषय लेकर आगे की पढ़ाई की.

इंजीनियर बनने का ख्वाब लिए सूरज इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए विदेश जाने की बात कहने लगता हैं. सूरज की इन बातों को सुन और बेटे से दूर होने की बात सोच राजेश और मीना की आँखों में आंसू आ जाते है.

पर बेटे की इंजीनियर बनने कि सपने और उज्जवल भविष्य की कामना के साथ सूरज को नम आँखों से विदेश जाने की इजाजत दे देते हैं.

शहरी माहौल में पले-बढ़े सूरज को विदेश में सामंजस्य बिठाने में ज्यादा वक्त नहीं लगा. सूरज खूब मन लगाकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने लगा. पढाई पूरी होने पर सूरज को एक अच्छी सी कंपनी में नौकरी लग जाती हैं.

सूरज जिस कंपनी में नौकरी कर रहा था उसी कंपनी में इंजीनियरिंग की नौकरी कर रही एक लड़की से सूरज शादी भी कर लेता है.

अपनी नौकरी और अपने परिवार में मस्त सूरज विदेशी रंग में इतना रंग गया था कि उसे अपने माँ-बाप की फिकर ही नहीं थी.

सूरज विदेश आकर मानो अपने माँ बाप को भूल ही गया. ना नौकरी लगने की बात बतायी और ना ही शादी की बात.

उधर बूढ़े हो चुके माँ बाप के लिए सूरज मानो सूरज की ही तरह बहुत दूर हो गया था. राजेश और मीना उसके वापस आने की बेसब्री से प्रतीक्षा करते रहते .

औलाद होते हुए भी बेऔलाद की तरह दिन हीन जिंदगी जीने को मजबूर होते है .

एक दिन सूरज अपनी पत्नी के साथ ऑफिस जा रहा था तभी सड़क दुर्घटना में उसकी पत्नी की मौत हो जाती हैं. सूरज रोने लगता है, चिल्लाने लगता है. सूरज के लिए उसकी दुनिया मानो उजड़ सी गई.

अब सूरज को अपना वतन और माँ-बाप याद आने लगते है. सूरज अपने दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ अपने घर वापस लौट आता है.

सूरज जब वापस अपने घर आता है तो देखता है की उसका घर जर्जर खंडहर और वीरान ताला लगा देख चौक जाता हैं.

सूरज को घर वापस आने मे बहुत देर हो चुकी थी. पड़ोसी ने बताया की बुजुर्ग माँ बाप ने अपने बेटे के इंतजार में प्राण त्याग दिए पर उनका इकलौता बेटा विदेश से लौटकर नहीं आया और ना कभी उनका हाल चाल पूछा. बुजुर्ग माँ-बाप को स्वर्ग सिधारे 10 साल हो गए है.

पड़ोसी की बात सुन सूरज बहुत दुखी होता है, रोने और पछताने लगता हैं. फिर अपना देश छोड़ कर विदेश न जाने का प्रण करता है.

*****

बादल के रंग निराले

रचनाकार- आराधना प्रियदर्शनी

निरंतर बादल नील गगन में,
आजाद घूमता शोर मचाता.
कभी रुके तो कभी चले,
यह अलग-अलग रंग दिखाता.

सुबह तो लगता बिल्कुल नीला,
दिन में लगता श्वेत स्वक्ष.
शाम को लगता है यह गुलाबी,
जल दर्पण में यह प्रत्यक्ष.

यह मनमौजी हवा का झोंका,
आश्रय हिन यह बंजारा.
यह वर्षा का संकेत है देता,
होता है बादल आवारा.

घने बादल वर्षा ऋतु में,
शोर मचाए गरज गरज कर.
फिर सब को तृप्त व प्रसन्नचित्त कर,
कृषि मन भाए बरस बरस कर.

नीला व श्वेत रंग इसका,
दर्शाता सच्चाई है.
बूंदों के रूप में भू पर,
बरसाता अच्छाई है.

इसके रंग में डूब के देखो,
अलभ्य एक गहराई है.
कोई छू न सके उसके दामन को,
इतनी इसकी ऊंचाई है.

काली घनघोर घटाएं जब,
छा जाए अनंत आकाश में.
मिट्टी की सोंधी खुशबू दर्शाए,
है जो तारुण्य छुपी बरसात में.

सूरज की चमक पर घुंघट बनकर,
जब शर्माती काली मेघा छा जाए.
तब बिजली की तलवार करे समर्पण
और बूंदों के बाण चलाए.

जब बचपन की शरारते और यौवन का जोश,
बातें करें किसी अक्षत ख्वाहिश की.
उसी तरह हरी हरी पत्तियों पर बिखरी बूंदे,
अठखेलियां दिखलाए बारिश की.

*****

शिक्षक हमें सिखाता हैं

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

संयम और विश्वास रखना,
जीत के लिए परिश्रम करना,
कोशिश अंत तक करते रहना
शिक्षक हमें सिखाता है.

जल्दी सोना,जल्दी जगना
समय के साथ हरदम चलना
सिखने को आतुर रहना,
शिक्षक हमें सिखाता है.

मन लगाकर पढ़ाई करना,
कुसंगत से दूर ही रहना,
अपने बड़ो का इज्जत करना
शिक्षक हमें सिखाता हैं.

सच्चाई के राह में चलना,
आपस में मिल जुल कर रहना,
अपना काम खुद से है करना,
शिक्षक हमें सिखाता है.

बाधाओं से दूर निकलना,
दिन रात मेहनत है करना,
लक्ष्य मार्ग पर आगे बढ़ना,
शिक्षक हमें सिखाता है.

*****

पापा ! क्या तारे भी लोरी सुनते है

रचनाकार- परवीन बेबी दिवाकर

रात में पापा आकर पास,
लोरी मुझे सुना देना.
तारो की वो प्यारी बात,
कान में मेरे सुना देना.

क्या तारे भी देखते मुझको,
ये भी मुझको बता देना.
रात में पापा आकर पास,
लोरी मुझे सुना देना.

क्या तारो को भी उनके पापा,
लोरी रोज सुनाते हैं.
मीठी - मीठी चॉकलेट टॉफी भी उनको रोज खिलाते है,
बस तारो की ऐसी बातें मुझको आप बतला देना.
रात में पापा आकर पास,
लोरी मुझे सुना देना.

लोरी सुनकर मै सो जाऊँ तो,
माथा चूमकर, चादर मुझे ओढ़ा देना.
रात में पापा आकर पास,
लोरी मुझे सुना देना.

*****

शालिनी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

मजदूरी का काम करने वाले मोहन और मीरा की छ: बिटिया थी. मोहन की चाह थी कि एक बेटा हो.

मीरा जब सातवीं बार गर्भ में थी,तब पता चला की आने वाले संतान बिटिया ही है. मोहन मीरा की गर्भपात कराने की सोचता है किन्तु मीरा इसके लिए सहमत नहीं होती और एक सुंदर सी बिटिया को जन्म देती है.

बिटिया का नाम शालिनी रखते हैं. शालिनी को बचपन से ही खेलने कूदने का शौक था. स्कूल के दिनों में शालिनी सभी खेलो में भाग लेती और जीत भी हासिल करती किन्तु उसे दौड़ का खेल बहुत अच्छा लगता था.

शालिनी का बचपन से सपना था कि दौड़ के खेल में मेडल जीतकर अपने और अपने देश का नाम रोशन करे.

अपने इसी सपने को पूरा करने के लिए दिन में स्कूल जाती और सुबह-शाम दौड़ की तैयारी करती.

शालिनी स्कूल स्तरीय से जिला स्तरीय और जिला स्तरीय से राज्य स्तरीय खेलो में जीत हासिल कर आगे बढ़ने लगी. अब शालिनी दिन रात खेल के बारे में सोचती रहती और खेल की तैयारी में लगी रहती,मानो उसके लिए खेल ही सब कुछ था. लंदन में ओलंपिक खेलों का आयोजन होने वाला था. ऐसे में शालिनी अपनी दौड़ की तैयारी करने के लिए शहर जाने की सोचती है.

अगली सुबह शालिनी रेलवे स्टेशन में रेल आने का इंतजार कर रही थी. तभी रेल की आवाज सुनाई दी और लोगों की भिड़ जुटने लगी. भीड़ में फंसी शालिनी रेल में चढ़ने की कोशिश कर रही थी तभी रेल छूटने की आवाज सुनाई दी. रेल में चढ़ने के लिए लोगों में खुब धक्का-मुक्की होने लगी और इसी धक्का-मुक्की में शालिनी रेल के नीचे आ गिरी और उसका एक पैर कट गया.

शालिनी को जब होश आया तब वह अस्पताल में थी और अपने कटे हुए पैर देख खूब रोई और चिल्लाने लगी. शालिनी का सपना अब मानो टूट-सा गया था. किन्तु शालिनी अभी भी हार नहीं मानी थी . उसे विश्वास था कि वह एक दिन अपने सपने को जरूर पूरा करेगी.

अब शालिनी शहर से गाँव आकर अपने घर में रहने लगती है. एक दिन उनकी मुलाकात गॉव के मास्टर जी प्रीतम साहू से होती है. शालिनी के कटे हुए पैर देख मास्टर जी को बहुत दुख हुआ किन्तु शालिनी के साहस और विश्वास को देख मास्टर जी गौरवान्वित भी हुए.

मास्टर जी शालिनी के पैर का इलाज कराने शहर ले गए. डॉक्टर ने शालिनी के पैर का इलाज कर कटे हुए पैर पर नकली पैर लगा दिया. शालिनी अपने दोनों पैरों से चलने लगी और धीरे-धीरे दौड़ने का अभ्यास करने लगी. लगातार अभ्यास और साहस के बल पर शालिनी पहले की तरह तेज रफ्तार दौड़ने लगी.

अब शालिनी ने टोक्यो में होने वाले पैरा ओलंपिक 100 मीटर दौड़ में हिस्सा लिया और प्रथम स्थान हासिल कर अपना सपना पूरा किया और अपने माँ-बाप तथा अपने देश का नाम रोशन किया. .

*****

बादल का खेल

रचनाकार- परवीन बेबी दिवाकर

खेलते देख बच्चों को,
अंबर से छोटा बादल.
उतर आया धरा पर,
बोला मैं भी खेलूँगा संग तुम्हारे.

छुपन -छुपाई और गुल्ली डंडा,
दौड़ लगाएंगे यदि सभी तो.
मै भी दौड़ लगाऊंगा,
परी - पत्थर या नदी पहाड़.

खो खो खेल या हो कबड्डी,
फुगड़ी का भी खेल मै खेल पाऊंगा.
हम सब बच्चे मिलकर चलो खेले,
इन खेलो को खेलने से,
साथ में बढ़ेगी हमारी मेल.

सेहतमंद रहेंगे हम सब,
मजबूत हम बन जाएंगे.
रोज रोज खेलों का मजा,
ऐसे ही हम उठाएंगे.

*****

पेड़ो के है नाम अनेक

रचनाकार- परवीन बेबी दिवाकर

पेड़ो के हैं कितने नाम
आम, इमली और जाम.
पीपल, बरगद, नीम
हैं ! ये बड़े हकीम.

आवंला, हर्रा, बहेरा,बेल
दवा बनाने में इनका मेल.
सागौन, शीशम, साल, बीजा, सरई,
इनका उपयोग करे बढ़ई.

रीठा, बादाम, मुनगा, नारियल, कदम
इनका उपयोग करो हरदम.
सेब, अमरुद, संतरा, केला, अनार,
खाने का लगा दे बाजार.

इन नन्हें पौधों को भूल ना जाना
तुलसी, गुलाब, गेंदा, मोंगरा.
गुड़हल, चमेली, रात की रानी
इसको देना रोज पानी.

ये पौधें घर की शोभा बढ़ाये
घर, आंगन में खुशबू फैलाये.

*****

गौरैया

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आओ न प्यारी गौरैया
मेरे घर में डेरा डालो.
मेरे घर को तुम
अपना घर बना लो.

तुम्हें खोजते खोजते
हम हैं बहुत परेशान.
आओ न घर में मेरे
मेरे घर की बढ़ाओ शान.

क्यों नाराज हो कर तुम
छोड़ गई घर मेरा.
बतलाओ तुम हमको
डाला कहां पर डेरा.

दाना पानी सब तुमको
रोज हम देते थे.
तुम्हें देख कर घर में
हम बहुत खुश होते थे.

अब आ गई हो तो
जाने का नाम न लेना.
यहीं पर रहना यहीं पर खाना
यहीं पर खेलना कूदना.

तुमसे देखो घर में
आती है खुशहाली.
तुम ना होती हो तो
घर लगता खाली खाली.

*****

परियों के देश में

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

गर्मी के दिन थे, भीषण गर्मी पड़ने लगी थी. आज मोनू ने शाम का खाना जल्दी ही खा लिया और दरी उठाकर वह अपने छत पर सोने चला गया. अंधेरी रात थी, आसमान में असंख्य तारे टिमटिमा रहे थे, मोनू तारों को देख रहा था. कोई छोटा,कोई बड़ा, तो कोई बहुत चमकीला. देखते ही देखते कुछ ही समय में सोने चांदी से जड़ा हुआ एक उड़नखटोला नीचे आया और मोनू को उड़ा कर ले गया. आसमान में उड़ते- उड़ते वह एक अनोखी दुनिया में चला गया. जहाँ सभी लोगों के पँख लगे हुए थे, लेकिन मजे की बात ये थी कि, यहाँ मोनू के सभी दोस्त रिंकू, पिंकू, टिंकू पहले से ही मौजूद थे. रिंकू, मोनू को देखते ही अपने सुनहरे पंखों से उड़ते हुए उसके पास आया, और बोला-

अरे! मोनू तुम आ गए! सफ़र में तुम थक गए होंगे, चलो पहले हमारे साथ स्नान कर लो. रिंकू उसे एक बहुत बड़े खूबसूरत स्वीमिंग पुल में ले गया. मोनू ने देखा - अरे ये तो चाकलेट से बना हुआ है, चाकलेट वाला पानी चाकलेट की नाव. मोनू ने खूब मस्ती की, जी भर कर चाकलेट खाए.

नहाने के बाद सभी दोस्त मिलकर खाना खाने चले गए. वहाँ एक परी आई उसनें अपनी छड़ी घुमाई, तो पूरा टेबल मिठाईयों से भर गया. रसगुल्ले, जलेबी, चमचम तरह -तरह की मिठाईयाँ. अब सभी दोस्तों ने जी भरकर मिठाईयां भी खा ली. तभी एक बहुत खूबसूरत परी एक सुनहरे पँख लेकर आई और मोनू के हाथों में लगा दिया. हमारे दुनिया में जो भी आता है,उसे यह भेंट दिया जाता है. देखो एक -एक पँख मैंने तुम्हारे दोस्तों को भी दिया है. मोनू, अब जब भी तुम्हें परियों के देश में आने का मन करे तो उड़ते हुए आ जाना. तभी अचानक मोनू के हाथों को जोर से मच्छर ने काटा, मोनू ने जोर से अपने हाथों को झटककर मच्छर को मारना चाहा तो उसे लगा कि उसका पँख टूटने वाला है. मोनू जोर- जोर से चिल्लाने लगा अरे! मेरा पँख मेरा पँख, कहाँ चला गया मेरा पंख और वह उठकर बैठ गया. मम्मी भी उसके साथ जाग गई, क्या हुआ मोनू? अभी आधी रात है बेटा चलो सो जाओ! मोनू समझ गया कि वह सपने में परियों की देश में चला गया था. मोनू मम्मी के आँचल से अपना चेहरा ढंककर फिर से सो गया.

*****

कुत्ता और कोरोना

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

चला कोरोना सीना तान
कुत्ते ने तब पकड़ा कान.
बाप बाप वह लगा चिल्लाने
बोला कोई बचाओ जान.

कुत्ता अकड़ कर बोला तब
मैं तुमको ना छोड़ूंगा.
बहुत जान ली तुमने
अब मैं तेरी जान लूंगा.

तुम चीन से आए क्यों
सच सच हमें बताओ.
अपनी काली करतुतों का
सारा राज बताओ.

अब तो मैं तुम्हें
कहीं न जाने दूंगा.
हाथ पैर तोड़ कर तेरी
तेरी जान मैं लूंगा.

लाक डाउन लगवा कर तुमने
सब कुछ बन्द कराया.
बच्चों का स्कूल कालेज
अब तक ना खोलवाया.

सुना है तीसरी बार तुम
आफत ढाने वाले हो.
जनता में फिर से
दहशत फैलाने वाले हो.

आज तो मैं तुम्हें मार
खतम कर दूंगा तेरी कहानी.
मार कर तुमको मैं
मीटा दूंगा तेरी निशानी.

*****

पाँच बाल गीत

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक बंदरिया आती है
अपना नाच दिखाती है.
सब बच्चों को खुश कर के
पैसे खूब कमाती है.

बंदर मामा आते हैं
रोटी ले कर खाते हैं.
कोई उन्हें पकड़ने जाता
कूद कर भाग जाते हैं.

मम्मी मेरी आओ न
लोरी हमें सुनाओ न.
जल्दी से नींदिया रानी को
आंखों में बुलाओ न.

मछली रानी पानी में
खूब दौड़ लगाती है.
पानी से बाहर आती है तो
तड़प कर मर जाती है.

कौआ मामा आते हैं
कांव कांव चिल्लाते हैं.
गाना गाने आता नही
इसलिए शर्माते हैं.

*****

<u>हे उमापति</u>

रचनाकार- सोमेश देवांगन

हे उमापति बाबा भोले भंडारी,
करो कृपा हम दिन दुखारी.
हाँथ जोड़ बाबा करत विनती,
संकट काटो प्रभु हे त्रिपुरारी..

वृषभ पर हो आरुण मेरे बाबा,
धरे त्रिशूल ओ डमरू वाला.
जटा जुट चन्द्रमा तुमको सोहे,
हलाहल विष को पीने वाला..

राख भभूति तन भष्म रमाये,
जीव मानुस को खेल खिलाये.
मृत्यु के स्वामी आप कहाये,
काल भी डर के पीछे हट जाये..

मृत्युंजय मन्त्र का जाप कर जो,
काल के भय से मुक्त हो जाये.
भक्ति करे जो आपकी प्रभु,
भव बन्धन से मुक्त हो जाये..

सावन परब वार तुमको मनाऊ,
बेल पत्र चाँवल जल चढ़ाऊँ.
अर्पण कर दू अपना ये जीवन,
श्वास श्वास में तुमको पाऊ..

*****

छत्तीसगढ़ के छत्तीस भाजी

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

हमन छत्तीसगढ़िहा
कहाथन सबले बड़िहा
राजी रहिथन जी हमन भाजी म
नून चटनी अउ बोरे बासी म
नून चटनी अउ बोरे बासी म.

छत्तीसगढ़ के छत्तीस भाजी के बखान का करौ.
जम्मो भाजी म बढ़ ताकत हे बखान का करौ.

हमर छत्तीस भाजी के नाव बतावव कले चुप सुन.
मनेच मन म गात रहिबे भारत भुइयां के गुन.

आमारी भाजी चेज भाजी, भाजी तिवरा के साग.
चना भाजी लाल भाजी महि म खेड़हा के सुवाद.

गोदली भाजी बोहार भाजी मुसकेनी अउ पटवा.
कजरा भाजी मछरिया भाजी अउ चनौरी भाते सबला बढ़िया.

तीनपनिया, कुरमा, मुरई, अउ चौराई भाजी.
शुख दुख सब खा थन भैया रईथन सब झन राजी.

करमतत्ता, कांदा, अउ मखना, चुन चुनिया तै खाले.
पुतका, पालक, बर्रे,भाजी, तन ल ताकत देथे.

गोभी, लहसुवा,सरसो भाजी तन बर हे बरदान.
कुसुम, चरोटा, चिरचिरा भाजी हवय दवई समान.

आलू, भथूवा, उरला, गुडरु, भाजी के ताकत हवय अपार.
मुनगा, भाजी, म हमर दिदी बर शक्ति के भंडार.

छत्तीसगढ़ म छत्तीस भाजी हमर बर बरदान हे.
जेकर कोला बारी म उपजथे, हमर किसान भुइयां के भगवान ये.

हरछठ पूजा तीजा तिहार म भाजी के हे बड़मान.
एकरच बर तो छत्तीसगढ़ ह जग म हे महान.

जय छत्तीसगढ़ जय भारत

*****

अंगना मा शिक्षा

रचनाकार- रमा साहू

हम सबको मिलकर शिक्षा का जोत जलाना है .
शिक्षा को हर घर के आंगन तक पहुंचाना है.

आंगन म शिक्षा का गीत ये गाना है.
शिक्षा को हर घर के आंगन तक पहुंचाना है.

माताओं और बहनों को साथ में लेकर चलना है.
खेल खेल में सीखने के नए कीर्तिमान बनाना है.
अपने नन्हे मुन्ने को खेल-खेल में ही पढ़ाना है.
स्कूल में सिखाई गई सबक याद दिलाना है.
शिक्षा को हर घर के आंगन तक पहुंचाना है.

घर में काम के साथ ही सीखने सिखाने के क्रम को आगे बढ़ाना है.
अपने ननिहालो को शिक्षा की ओर ले जाना है.
हम सबको मिलकर शिक्षा का अलख जगाना है.
शिक्षा को हर घर के आंगन तक पहुंचाना है.

गांव गांव में शहर शहर में अब तो शोर है.
अंगना म शिक्षा पर जोर है.
सब माताओं को आगे आना है.
अंगना म शिक्षा को अपनाना है...

*****

रट्टू तोता

रचनाकार- के.शारदा

राम कक्षा सातवीं का छात्र है. वह हमेशा खेलते रहता है. पढ़ाई करना उसे उतना पसंद नहीं है. बस परीक्षा के समय वह पढ़ता है. माँ उससे कहती है बेटा पढ़ाई कर ले अभी नहीं पड़ेगा तो एक परीक्षा के समय कैसे पूरा सिलेबस को पूरा कर पाएगा. पर वह माँ की सुनता भी नहीं है.

देखते ही देखते परीक्षा का दिन पास आ गया. कल परीक्षा है, तो राम अब सुबह से पढ़ने लगा. माँ बोली बेटा जा कुछ खा ले, मुझे बहुत सारा पढ़ना है मुझे पढ़ने दो. साल भर तो तुम पढ़ते नहीं हो, और अब सुबह से रटे जा रहे हो. समझ कर पढ़ना चाहिए. पर राम माँ की एक ही बात ना सुन कर रट रट के पढ़ने लगा, भारत की राजधानी नई दिल्ली, भारत की राजधानी नई दिल्ली, सबसे बड़ा महासागर प्रशांत महासागर, सबसे बड़ा महासागर प्रशांत महासागर, इस प्रकार भारत के पढ़ने लगा.

परीक्षा का दिन आ गया. राम परीक्षा देने गया. प्रश्न पत्र देख कर उसे लगा मैंने जो पढ़ा वही प्रश्न आया है. हो गई वह घर घर चला गया. माँ ने राम से पूछा बेटा अपना प्रश्न पत्र दिखाओ. बेटे ने माँ को प्रश्न पत्र दिया. प्रश्नपत्र में से माँ ने प्रश्न पूछे भारत की राजधानी क्या है ? राम ने उत्तर दिया कोलकाता. सबसे बड़ा महासागर कौन सा है? राम ने उत्तर दिया एशिया. माँ ने कहा तुमने सारे प्रश्न के उत्तर गलत दिए हैं, इसलिए मैं कहती हूं कि रट रट के मत पढ़ा करो समझ के पढ़ा करो. राम को अपनी गलती का एहसास हुआ. बच्चों हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि - हमें कभी भी रट्टू तोता नहीं बनना चाहिए. किसी भी चीज को समझ कर पढ़ना चाहिए. हमें प्रतिदिन पढ़ाई करनी चाहिए.

*****

सच्ची दोस्ती

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

युगों युगों से आए,
देते है एक मिसाल.
श्रीकृष्ण सुदामा की,
दोस्ती बड़ी कमाल..

सच्ची दोस्ती जग में,
है बड़ी ही अनमोल.
राजा हो या कोई रंक,
ले सके ना इसे मोल..

कभी कोई भी ना हो,
वैराग्य धर उदास.
जब सच्चा मित्र हो,
हमारे अपने पास..

हसना रोना लगा है,
पर कोई रूठे ना.
सच्चे मित्र का साथ,
जो कभी छूटे ना..

मित्र बनाने से पहले,
कर ले जाँच-परख.
फिर सच्ची मित्रता का,
ले स्वाद तू चख..

*****

गुहार

रचनाकार- सीमा यादव

जम्मो मनखे ल गुहार लगाके कहत हव,
थोकिन दया भाव मन म रख के मानुस तन ल तार लेव.

जब तक मन म कपट भाव ह रइही.
तब तक बिकास के मारग ह नई दिखय.
अपन मन म ठान के चलिहा. तभे कुछु बात ह बनिही.

आवव जम्मो संगी अउ संगवारी मन.
आज हमन संकलप लेबो.

सुंता अउ परेम ल रहिबो ए संसार म.
तभे कुछु बड़का अउ सुग्घर करम कर सकबो.

*****

लाल बुझक्कड़

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

अक्कल के घोड़े दौड़ाते,
भैंस सामने बीन बजाते,
चल जाते कब अपनी चालें,
अच्छे अच्छे समझ न पाते।

सारे बच्चों के मन भाते,
सबका बिगड़ा काम बनाते,
अगर कोई उदास दीखता,
उसके मन का क्लेश मिटाते।

दुख में वे हौसला बढ़ाते,
श्रम की महिमा भी समझाते,
लाल बुझक्कड़ सबके साथी,
बच्चे उनको गुणी बताते।

*****

मोहल्ला क्लास

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

चलो मुन्ना चलो मुन्नी, मोहल्ला क्लास में पढ़ना है
मास्क लगा के दूर बैठना, कोरोना से भी लड़ना हैं.

सोना, परी, राज, अनमोल, शिक्षक संग बोलो बोल.
करे पढ़ाई ऑनलाइन ऑफ लाइन, और वाट्सअप कॉल.

मोहल्ला क्लास में शिक्षक देते बच्चो को ज्ञान.
पढ़ना हुआ प्रोजेक्ट आमाराइट से बड़ा आसान.

पढ़ाई तुंहर दुवार से जुड़ता गुरु शिष्य का नाता है.
शिक्षक और बच्चो को भी, पढ़ाई तुंहर दुवार मन भाता है.

हर बच्चो को शिक्षा मिंले, पढ़ाई तुंहर द्वार की तैयारी है.
कोरोना से लड़ने को माक्स और सेनेटाइजर भी जरूरी है.

शिक्षा से होता जीवन का उत्थान.
माक्स, सेनेटाईज़र और दूरी, स्वास्थ्य का रहे ध्यान.

जरूरी है मोहल्ला क्लास का ज्ञान.
पर स्वास्थ्य और सुरक्षा का रहे ध्यान.

*****

यातायात संकेत

रचनाकार- श्वेता तिवारी

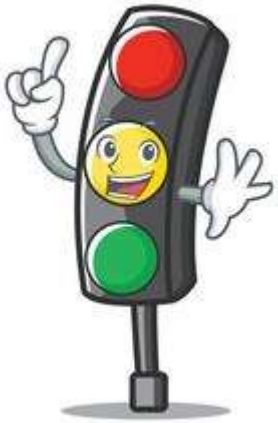

लाल संकेत लाल संकेत हमको क्या कहती है?
लाल संकेत लाल संकेत हमको क्या कहती है

रुको, रुको, रुको रुकने को कहती है.
पीला संकेत पीला संकेत हमसे क्या कहती है?

हरा संकेत का इंतजार करने कहती है.
हरा संकेत हरा संकेत हमको क्या कहती है?

चलो चले चलो अपने दाएं से चले चलो.
हरा संकेत हमसे यह कहती हैं.

*****

हरेली

रचनाकार- सोमेश देवांगन

आगे आगे ये दे हरेली तिहार.
रिमझीम पानी के परत फुहार..

चारो मुड़ा लागे हरियर हरियर.
तरोइ फूल दिखय पियर पियर..

खेती खार के होवत हे श्रृंगार.
नांगर कुदरी रापा धो के तियार..

चीला रोटी लाई धर खेत जाबो.
पूजा पाठ करके तिहार मनाबो..

घर के देवी देतवा ला मनाबो.
सक्ति अनुसार परसाद चढ़ाबो..

मांगबो भगवान ले हाँथ ल जोर.
सबके बाढ़य लक्ष्मी चारो ओर..

नीम के डारा ला घर मा खोचबो.
बीमारी ला घर आय ले रोकबो..

बॉस के सुघ्घर सब गेड़ी बनाबो .
रापा कुदरी संग गेड़ी पूजा कराबो..

रेच रेच चढ़ के मजा ला उड़ाबो.
चिखला पानी सब मा हम चलाबो..

संझा के बेरा नरीयर ला फेखबो.
हार जीत के खेल ला देखबो..

सब मिलजुल के हँसबो हँसाबो.
हरेली तिहार ला कूद कूद मनाबो..

*****

दिया-बाती

रचनाकार- ब्रिजभान टंडन

जब बहस कभी बढ़ जाये तो
या जंग कभी छिड़ जाये तो
बजाय बात बढ़ाने के
आप धीरे से मुस्कुरा देना
हम दोनों जीवन साथी हैं
एक दीपक हैं एक बाती हैं
हम दोनों साथ चलेंगे गर

मुश्किल नहीं होगा सफर.
कभी बच्चों की शैतानी से
या कभी किसी परेशानी से
अपना आपा खो जाऊँ गर
तो बजाय मुझे झुन्झलाने के
गले से मुझे लगा लेना
हम दोनों जीवन साथी हैं
एक दीपक हैं एक बाती हैं
हम दोनों साथ चलेंगे गर
मुश्किल नहीं होगा सफर.

जब किसी के ताने से
या दर्द किसी पुराने से
दिल छलनी सा हो जाये
तो बजाय दिल जलाने के

बस बातों से बहला देना
हम दोनों जीवन साथी हैं
एक दीपक हैं एक बाती हैं
हम दोनों साथ चलेंगे गर
मुश्किल नहीं होगा सफर.

जब चलते चलते राहों में
थकन सी हो जाये पावों में
तो बजाय अकेले जाने के
आप साथ मुझे बुला लेना
हम दोनों जीवन साथी हैं
एक दीपक हैं एक बाती हैं
हम दोनों साथ चलेंगे गर
मुश्किल नहीं होगा सफर.

जब मन में कोई राज रहे
या दिल कभी नाराज रहे
तो बजाय कुछ छिपाने के
हर बात मुझे बता देना
हम दोनों जीवन साथी हैं
एक दीपक हैं एक बाती हैं
हम दोनों साथ चलेंगे गर
मुश्किल नहीं होगा सफर.

*****

निवारण

रचनाकार- सुषमा बग्गा

जीवन में दुख हैं,
दुख का कारण हैं,
कारण का निवारण हैं,
निवारण का मार्ग हैं,
मार्ग शिक्षक बनाता हैं,
अत: शिक्षकत्व पाने का प्रयास करें.

*****

जिराफ

रचनाकार- रोचिका अरुण शर्मा

लम्बी गर्दन भूरा रंग,
तन पर बने चकत्ते संग.
ऊँट-तेंदुए का यह मेल,
करें जुगाली दूजे फेल.

होती काली इनकी जीभ,
बीस इंच के रहे करीब.
छोटी आँखें छोटे कान,
ये भी हैं जंगल की शान.

जन्म हुआ शिशु आँखें खोल,
दौड़े वरना डब्बा गोल.
जीवन काल वर्ष पच्चीस,
दांत गिनो पूरे बत्तीस.

एक राज बतलाऊँ ख़ास,
नींद न फटके इनके पास.
आधे घंटे का इक डोज़,
लेता है बस ये तो रोज़.

भोजन इनका शाकाहार,
कीकर बबूल हैं आहार.

भोली-भाली सी ये जान,
अफ्रीका की है पहचान.

*****

काम करों

रचनाकार- सुषमा बग्गा

काम करों-काम करों,
सुबह करों, शाम करों
काम करों, काम करों,
ये नया पैगाम हैं
काम करों, काम करों,

देश का ऊंचा नाम करों
आओ मिल -जुल कर काम करों
काम करों, काम करों,
सुबह करों, शाम करों
काम करों, काम करों.

*****

स्वतंत्रता दिवस

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

आओ! स्वतंत्रता दिवस मनाएँ.
राष्ट्र - एकता भाव जगाएँ.

पावन दिन पंद्रह अगस्त का
बलिदानों की याद दिलाता,
त्याग, तपस्या, देशभक्ति के
ध्वजा तिरंगा रंग लुटाता,

मातृभूमि की करें वंदना
आओ! जनगणमन दोहराएँ.

राष्ट्रधर्म से ओतप्रोत हो
भारत माँ का मान बढ़ाएँ,
शोषित, वंचित, दमित, भ्रमित को
देशप्रेम का पाठ पढ़ाएँ,

सीमाओं की करें सुरक्षा
सैन्य व्यवस्था सुदृढ़ बनाएँ.

सब शिक्षित हों, सुखी - स्वस्थ हों
मिले सभी को ज्ञान सुअवसर,
घर - घर में पहुँचे उजियाला
दिव्य रश्मियाँ लाए दिनकर,

हराभरा हो भारत उपवन
देखरेख कर स्वयं सजाएँ.
आओ! स्वतंत्रता दिवस मनाएँ.

*****

राखी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

पर्व स्नेह का लायी राखी.
सबके मन को भायी राखी.

तिथि सावन पूर्णिमा अनोखी,
शोर मच गया, आयी राखी.

मुन्नी, रेखा, तनु प्रसन्न हैं,
सोनू ने बँधवायी राखी.

भाई करे बहिन की रक्षा,
मान मिला, हर्षायी राखी .

थाली में अक्षत - रोली सँग,
फूलों बीच सजायी राखी.

चीनी राखी नहीं खरीदी,
रँग कर सूत बनायी राखी.

मुँह मीठा करके भैया का,
भेंट मिली, मुस्कायी राखी .

सैनिक डटे हुए सीमा पर,
उनको भी भिजवायी राखी.

पेड़ों के बाँधी रक्षा हित,
गर्व से तब इठलायी राखी.

डाक्टर, पुलिस, कोरोना योद्धा
कर में बँध इतरायी राखी.

नये रूप में, नये रंग में,
सबके मन पर छायी राखी.

*****

अंगना मा शिक्षा

रचनाकार- सुधारानी शर्मा

अंगना मा शिक्षा, बगरे हवय ओ..
चलव दीदी, दाई, बहिनी, जतन करलव.

जोड़ना, घटाना, चित्र, कविता, कहानी,
खेती, साग भाजी, संग गोठ आनी बानी,
लइका ला सीखो पढो के,
जीवन ला धन्य कर लो.
चलव दीदी, दाई, बहिनी जतन करलव,

अंगना मा शिक्षा बगरे हवय ओ,
चलव दीदी, दाई, बहिनी, जतन कर लव.

आखर के थरहा, अऊ अंक के ज्ञान,
येखर महत्ता समझव, लइका अऊ सियान,
घर कुरिया मा हवय ग्यान के खजाना,
राधत, खावत, खेलत, ओला लइका ला समझाना,
विद्या दान देके, जीवन सफल कर लो,
चलव दीदी, दाई, बहिनी, जतन करलव.

अंगना मा शिक्षा बगरे हवे वो,
चलव दीदी दाई बहिनी जतन कर लो.

*****

ऑनलाइन शिक्षा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

हुआ साल बर्बाद, काल कोरोना आया.
हुए सभी बीमार, कहर दुनिया में छाया..
कमरे में सब बंद, बैठ कर रहते सारे.
दूर- दूर सब लोग, लगे जैसे बेचारे..

स्कूल कॉलेज बंद, पढ़ाई हुआ अधूरा.
निकला कुछ तरकीब, ऑनलाइन का पूरा..
बच्चें बैठे रोज, हाथ मोबाइल पकड़े.
बीमारी भी साथ, सभी बच्चों को जकड़े..

करे बहाने रोज, हाथ मोबाइल भाये.
खेला करते गेम, पढ़ाई समझ न आये..
पुस्तक कॉपी देख, परीक्षा लिखते सारे.
शिक्षक पकड़े माथ, सभी शिक्षा से हारे..

जो गरीब परिवार, फोन भी पास न होते.
नहीं बैठते शांत, फूट कर बच्चें रोते..
हुए अधूरे लक्ष्य, देख शिक्षा है पिछड़े.
पुस्तक कॉपी दूर, बिना बच्चें है बिगड़े..

*****

पचरी

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया

पचरी तेरे बनते ही तालाब में पानी भी भर गया
सीढ़ी तक पानी आते ही लोगों में खुशी छा गया.

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया
कभी विरान रहे जो घाट उसमें भी भीड़ हो गया
घर में नहाने वाले पचरी में नहा सराबोर हो गया.

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया
छोटे पत्थर पर बैठ नहाने की किल्लत खत्म हो गया.
नहाने के लिए बारी की प्रतीक्षा करना अब बंद हो गया.

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया
नहाने की बात छोड़ो कपड़ा धोने में मजा आ गया
अब कपड़े भी सुखाने के लिए अहाता बन गया.

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया
तू मान न मान, तू तालाब का सम्मान बन गया
तुझे बनाने लोग तन मन धन समर्पित कर गया.

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया*
तेरी सुंदरता को देख, लोगों ने स्वच्छता भी अपनाया
चिंदी,दातुन, पाउच,पन्नी के लिए डस्टबिन भी बनवाया.

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया
तुलसी चौरा भी तेरे ललाट पर चार चांद लगा गया
तेरी खूबियां देख, तुझे महिला आरक्षित कर गया

पचरी तेरे बनने से तालाब में रौनक आ गया

मनोज दुआ करे तुझ पर बनी रहे लोगों की छत्रछाया
वर्षों तक सुंदर दिखते रहना लोगों ने मन से है बनवाया.

*****

धैर्य और हिम्मत

रचनाकार- वंदिता शर्मा

बहुत समय पहले की बात है छत्तीसगढ़ में एक गौंटिया रहते थे. गौंटियाके तीन पुत्र थे, एक दिन गौंटिया के मन में आया कि पुत्रों को कुछ ऐसी शिक्षा दी जाये कि समय आने पर वो वो अपने परिवार को सम्भाल सकें.

इसी विचार के साथ गौटिया ने सभी पुत्रों को अपने पास में बुलाया और बोला, “पुत्रों, हमारे बग़ीचे में सेब का कोई वृक्ष नहीं है, मैं चाहता हूँ तुम सब चार-चार महीने के अंतराल पर इस वृक्ष की तलाश में जाओ और पता लगाओ कि वो कैसा होता है ?

गौंटिया की आज्ञा पाकर तीनों पुत्र बारी-बारी से गए और वापस लौट आये.

सभी पुत्रों के लौट आने पर गौंटिया ने पुनः सभी को अपने पास में बुलाया और उस पेड़ के बारे में बताने को कहा.

पहला पुत्र बोला, “पिताजी वह पेड़ तो बिलकुल टेढ़ा – मेढ़ा, और सूखा हुआ था.”

“नहीं-नहीं वो तो बिलकुल हरा–भरा था, लेकिन शायद उसमे कुछ कमी थी क्योंकि उस पर एक भी फल नहीं लगा था.” दुसरे पुत्र ने पहले को बीच में ही रोकते हुए कहा -

फिर तीसरा पुत्र बोला, “भैया, लगता है आप भी कोई गलत पेड़ देख आये क्योंकि मैंने सचमुच सेब का पेड़ देखा, वो बहुत ही शानदार था और फलों से लदा पड़ा था.”

और तीनो पुत्र अपनी-अपनी बात को लेकर आपस में विवाद करने लगे.

तभी गौंटिया उठे और बोले, “पुत्रों, तुम्हे आपस में बहस करने की कोई आवश्यकता नहीं है, दरअसल तुम तीनो ही वृक्ष का सही वर्णन कर रहे हो. मैंने जानबूझ कर तुम्हे अलग-अलग मौसम में वृक्ष खोजने भेजा था और तुमने जो देखा वो उस मौसम के अनुसार था.

मैं चाहता हूँ कि इस अनुभव के आधार पर तुम तीन बातों को गाँठ बाँध लो :

पहली बात, किसी चीज के बारे में सही और पूर्ण जानकारी चाहिए तो तुम्हे उसे लम्बे समय तक देखना-परखना चाहिए. फिर चाहे वो कोई व्यवसाय, विषय, वस्तु हो या फिर कोई व्यक्ति ही क्यों न हो.

दूसरी, हर मौसम एक सा नहीं होता, जिस प्रकार वृक्ष मौसम के अनुसार सूखता,

दूसरी बात उस जगह की प्रकृति व जमीन और वहां की मिट्टी पर भी निर्भर रहता है वृक्षों का जीवन की किस प्रकार वह हरा-भरा या फलों से लदा रहता है उसी प्रकार कारोबार तथा मनुष्य के जीवन में भी उतार चढाव आते रहते हैं, अतः अगर तुम कभी भी बुरे दौर से गुजर रहे हो तो अपनी हिम्मत और धैर्य बनाये रखो, समय अवश्य बदलता है.

और तीसरी बात, कभी भी झूठ का सहारा न लो अपनी बात को ही सही मान कर उस पर अड़े मत रहो, अपना दिमाग खोलो, और दूसरों के विचारों को भी जानो.

*****

बहादुर बालक

रचनाकार- सीमा यादव

मैं नन्हा सा -छोटा सा एक बहादुर बालक हूँ.

मैं अपने घर -परिवार का नन्हा सा चालक हूँ.

मैं तरह- तरह की सुधार योजना का कारक हूँ.

मैं नन्हा सा बालक भावी अन्याय का मारक हूँ.

मैं, निर्बल, असहाय एवं दीन- दुःखियों का तारक हूँ.

*****

उमड़ घूमड़ के आये बादल

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

उमड़ घूमड़ के बादल आए,
रिमझिम रिमझिम जल बरसाए.

देखकर रिमझिम फुहारों को
मेरा मन बड़ा बरसे,

देखे मोर काले काले बादल को,
पी..पी.... की आवाज करें

सखी सहेली हम सब मिलकर
रिमझिम रिमझिम बारिश का आनंद ले

उमड़ घूमड़ के बादल आए,
रिमझिम रिमझिम जल बरसाऐ.

टिप टिप टिप टिप पानी जब बरसे,
छप छप छप छप मन तरसे.

उमड़ घूमड़ के बादल आए,
रिमझिम रिमझिम जल बरसाए.

*****

NEP पर विशेष चर्चा

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

क्रिटिकल थिंकिंग के अंतर्गत लॉजिकल थिंकिंग पर प्रश्न सामने आने से बहुत सारी बातें स्पष्ट हो जाएगी . किसी भी मुद्दे पर पूर्ण जानकारी रखना और उसके प्लस पॉइंट एवं माइनस पॉइंट को ध्यान में रखकर अर्थात उस विषय के सकारात्मक और नकारात्मक स्वरूप को देख पाने की क्षमता एवं सोच समझकर तर्कपूर्ण चिंतन करते हुए उसे सही रूप देना ही लॉजिकल थिंकिंग हैं. लॉजिकल थिंकिंग को स्पष्ट करने के लिए वर्तमान काल के प्रासंगिक मुद्दे पर बात की गई.

लेकिन की पर्याप्त आपूर्ति क्यों नहीं हो पा रही है इसके क्या कारण है क्या अपने देश में वैक्सीन उपलब्ध कराना सरकार का नैतिक कर्तव्य नहीं है. दूसरे देशों को वैक्सीन उपलब्ध करवाने से पहले अपने देश के बारे में सोचना सरकार का कर्तव्य नहीं था. ऐसे सवालों के जवाब व्यक्ति विशेष पर निर्भर करते हैं. और इसका आधार होता है स्वयं को सामने रखकर किसी समस्या को देख पाने की क्षमता. इसे हम व्यक्तिगत नजरिया कह सकते हैं. यह जरूरी नहीं कि सभी व्यक्ति का जवाब सही हो. हर व्यक्ति का अपना नजरिया होता है और उसका नजरिया उसकी आवश्यकताओं से प्रभावित होती हैं. ऐसी स्थिति परिस्थिति में हमें चैन से ऊपर उठकर सोचने समझने और तर्कपूर्ण भी चिंतन करने की आवश्यकता होती हैं. जैसे कि इसी मुद्दे को अगर हम एक छोटे से देश भूटान जो कि काफी गरीब माना जाता है उसके नजरिए से देखें तो स्थिति कुछ अलग होगी. भूटान वैक्सीन खरीदने की स्थिति में नहीं थे और उन्हें एक्टिंग की नितांत आवश्यकता थी ऐसे समय में भारत द्वारा उन्हें वैक्सीन उपलब्ध करवाया जाना उनके लिए डूबते को तिनके का सहारा साबित हुई. और यह फैसला उस समय लिया जब भारत के लोगों में वैक्सीनेशन एवं व्यक्ति के प्रति काफी नकारात्मक रवैया देखने को मिल रहा था कहने का तात्पर्य है कि काफी ब्राह्मण की स्थितियां यहां पर थी. तो उस समय के हिसाब से वैक्सीन का सही इस्तेमाल हुआ साथ ही इससे देशों के बीच सौहार्द्र की भावना और सहयोग की भावना का एक सकारात्मक पक्ष का निर्माण हुआ. अब चुकी सभी लोग वैक्सीनेशन के लिए अवेयर हो चुके हैं यहां तो सरकार यहां पूर्व प्राथमिकता के साथ वैक्सीनेशन के लिए कटिबद्ध नजर आती है.

इस मुद्दे पर हम क्रिटिकल,लॉजिकल थिंकिंग का बहुत अच्छा उदाहरण देखने को मिलता है.

क्रिटिकल थिंकिंग के पांच भागों की बात की गई जों क्रिटिकल थिंकिंग के आधार हैं.

- विषय या समस्या का पूर्व ज्ञान.
- वैचारिक स्वतंत्रता
- किसी भी तथ्य के सही और गलत पक्ष को देख पाने का दृष्टिकोण.
- स्तरीय चिंतन अर्थात इस स्तर पर चिंतन कर पाते हैं
- दृष्टिकोण अर्थात देखने व समझने का नजरिया.

क्रिटिकल थिंकिंग के लिए उस विषय का पूरा ज्ञान एवं पूर्व ज्ञान होना अति आवश्यक पहलू है.

NEP के प्रमुख भाग

👉 स्कूली शिक्षा

स्कूली शिक्षा व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्र के आधार पर डिजाइन किया गया है. जिसे की 5+3+3+4 के रूप में परिभाषित किया गया है.

👉 प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा(ECCE) :-इस व्यवस्था में पांच जो है वह 3 वर्ष पूर्व प्राथमिक अर्थात बाल वाटिका के साथ प्राथमिक स्तर के 2 कक्षाओं को सम्मिलित किया गया है. इससे पूर्व बाल वाटिका या आंगनबाड़ी केंद्रों की शिक्षा अनौपचारिक माना जाता रहा है. अब इसे औपचारिक रूप से प्राथमिक के दो कक्षा के साथ मिलाकर देखने समझने और कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है. इस अवस्था में 3 वर्ष के बच्चों को शामिल कर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की एक मजबूत बुनियाद को भी शामिल किया जा रहा है जिसे की ईसीसीई अर्थात अर्ली चाइल्डहुड केयर एजुकेशन कहां गया है. 3 से 6 वर्ष के बच्चों को औपचारिक शिक्षा से जोड़ने के पीछे सिद्धांत यह है कि मनोविज्ञान एवं मस्तिष्क विज्ञान के अनुसार 3 से 6 वर्ष के बच्चों में मस्तिष्क का 80 से 85% विकास हो चुका होता है. इस दौरान मस्तिष्क के न्यूरॉन्स का विकास तेज गति से होता है एवं इस स्तर पर संज्ञानात्मक भाषाई व गणिती अवधारणाओं को समझने के विकास की गति अत्यंत तीव्र होती हैं. अतः यह महत्वपूर्ण स्तर होता है जब बच्चों को विभिन्न अवधारणाओं को सीखने समझने और उसे अनुभव करके सीखने के अवसर दिए जाए तो उनका सर्वांगीण विकास बहुत अच्छे से होता है. अतः 3 से 6 वर्ष के बच्चों को प्राथमिक बच्चों के साथ मिलाकर औपचारिक शिक्षा दी जाने की प्रावधान कीया गया है. 3,6 वर्ष की उम्र में बच्चों को सीखने के समुचित सुखद वातावरण उपलब्ध हो इसके लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है.

*****

<u>देख कर मैं व्यथित हूँ</u>

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

पीड़ा में तड़पते हुए अपनों को,
टूट कर बिखरते हुए सारे सपनों को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.

निस्तब्ध,स्तंभित की वेदनाओ को, साथ ही लोगों की असंवेदनाओं को, देखकर मैं व्यथित हूँ..
पर पीड़ा में अवसर ताक रहे लोगों को,सांसो की कालाबाजारी करते सौदेबाजों को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.

पूर्वजों देखा था लाशों पर चढ़कर आजादी आई थी,
हम देख रहे आज लाशों पर गरमाई तुच्छ राजनीति को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.

अब तो जिंदगी और मौत पर भी आरक्षण का दांव चल रहा,
हमारी ही आस्तीन में जाने कब से फरेबी सांप पल रहा,
देख कर मैं व्यथित हूँ.

कोई तरस रहा हवा को तो कोई तरस रहा दवा को,
पर क्या फर्क पड़े देश के लापरवाहो को,गद्दारों को,
देख कर मैं व्यथित हूँ.

लोग पढ़ लिखकर परंपराओं संस्कारों से दूर हो गए,
सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे भद्राणि पश्यंतु के भाव अब लुप्त हो गए,
देख कर मैं व्यथित हूँ.

कहां गई वो रिश्तो की गर्माहट वह भावनाएं, वह आत्मीयता,
इस दुख में मौका परस्ती की दिखाई पड़ रही कैसी यह विडंबना, देखकर मैं व्यथित हूँ....

इधर मर रहे सब बीमारी से,उधर हर तरफ कत्लेआम हैं.
हर जगह घोटालेबाजी इधर भी शमशान उधर भी श्मशान हैं.
देखकर मैं व्यथित हूँ.

खून हो रहा मानवता का, शांति से मन वीरान हैं.
आज फिर भी चुप क्यों हिंदुस्तान हैं देख कर मैं व्यथित हूँ.

असहिष्णुता की आग में आज जल रहा पूरा बंगाल है.
तथाकथित फिल्मीस्तानी देशभक्त आज क्यों बेजुबान हैं.
देख कर मैं व्यथित हूँ.

वायरस ने आज पुनः सबको कर दिया बेहाल है.
खींच लिया इसने सारे रंग बदलते गिरगिटों की खाल है.
देख कर मैं व्यथित हूँ.

हर तरफ त्रासदी,हर तरफ मच रहा हाहाकार है.
हमसे रूठ चुके क्यों अब हमारे संस्कार हैं.
देख कर मैं व्यथित हूँ.

अब कहां गई वह वसुधैव कुटुंबकम की भावना,
यहां अब हर किसी को सत्ता धन की है कामना.
देख कर मैं व्यथित हूँ...

राजनीति की चिट्ठी लिखना छोड़ कुछ तो अच्छा काम करो.
अब तो षड्यंत्र बंद करो, तुम जैसों को धिक्कार है.
देखकर मैं व्यथित हूँ.

हर तरफ भ्रम,हर तरफ लालच की बहार है.
जाने कितने अपने चले गए, कितनों को इंतजार है.
देख कर मैं व्यथित हूँ.

आज इंसान कितना बेबस कितना लाचार है.
बद से बदतर होते जा रहे,किसी के काबू में अब नहीं हालात है.
देख कर मैं व्यथित हूँ..

बाहर खतरा है मत निकल, पर तू तो पतंगा दीवाना है.
क्यों नहीं देख रहा आज हर गांव हर शहर हो रहा वीराना है.
देख कर मैं व्यथित हूँ.

घर पर रहो,सुरक्षित रहो,बात हमारी मान लो. जो कुछ जितना बचा है अब तो उसको प्यार से संभाल लो.
देख कर मैं व्यथित हूँ.

*****

अंश

रचनाकार- अरुण यादव

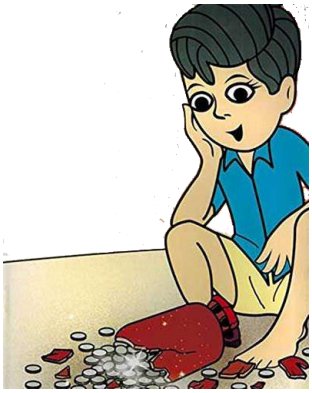

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के दौर में लॉकडाउन का लगना निम्न वर्गों और मजदूरों के लिए तो काल साबित हो रहा था.

खाने–पीने की वस्तुओं और सब्जियों के दाम तो सातवें आसमान पर थे.

गाँवों में तो लोगों के मरने की नौबत आ गई थी,राशन की दुकानों में ज्यादा से ज्यादा गेहूं और चावल मिल जाता था.

यह दृश्य देखकर 10 वर्ष के छोटे से बच्चे का दिल पसीज उठता, एक दिन दिन अपनी गुल्लक तोड़ी और सारे पैसे गिने लेकिन उसमें लगभग सात हजार रूपए ही निकले लेकिन इससे वो आखिर कितने लोगों की और कितने दिनों तक मदद कर सकता था?

फिर भी उसने सोचा जब तक होगा तब तक इन पैसों से जरूरतमंद लोगों को मदद करता रहेगा.

एक दिन उसके मन में एक अद्भुत विचार आया जिससे वो बहुत खुश हुआ.

उसने गाँव के उन–उन स्थानों को चुना जहां अब कोई नहीं रहता था जो खंडहर हो चुके थे.

उसने उन स्थानों की साफ–सफाई की और मिट्टी डालकर भिन्न–भिन्न प्रकार की सब्जियों के बीज बो दिए और नित्य उनकी देखरेख में लग गया.

कुछ दिनों बाद सब्जियों के बेल बड़ी हुई उनमें फूल आए और छोटे–छोटे बच्चे भी लगने लगे और इस प्रकार भिन्न–भिन्न प्रकार की डेढ़ सारी सब्जियाँ तैयार होने लगी और वो जरूरतमंद लोगों तक सब्जियाँ पहुंचाने लगा.

उसका ये अद्भुत कार्य देखकर गाँव के अन्य बच्चे यहां तक कि बड़े भी उसके सहयोग के लिए आने लगे और काम में हाथ बटाने लगे.

इससे वो छोटा सा बच्चा उन गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद करने में कामयाब हो सका.

*****

ठंडी हवा

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

ठंडी हवा चलती है,

कपड़ों को सुखाती है.
धूल को उड़ाती है,

पत्तों को हिलाती है
फसलों को लहराती है.

खुशबू को फैलाती है
बदबू को भी लाती हैं

बगिया को में महकाती है.
कांटो को उलझाती है

पेड़ो को भी हिलाती है,
फलों को भी गिराती है.

गर्मियों में राहत देती है
सर्दियों में ठीठुराती है.

मेरे गालों को छू जाती
मेरे बालो को उड़ाती है.

मुझे बहुत अच्छी लगती है,
जब पसीने को सुखाती है

जब ठंडी हवा चलती है,
जब ठंडी हवा चलती है.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी

आज बच्चे बहुत खुश थे, क्योंकि पूर्वा ने उन्हें अपने फॉर्म हाउस पर पिकनिक के लिए आमंत्रित किया था. कोविड 19 लॉकडाउन के कारण बच्चे घर में रहकर परेशान हो गए थे.

पूर्वा का फोन आते ही सभी बच्चों ने अपने मम्मी-पापा की इजाजत लेकर पुरवा के फार्महाउस में पहुंचे.

फार्महाउस का वातावरण, वहाँ की हरियाली, गोबर का संयंत्र, जैविक खाद, शुद्ध ऑक्सीजन, पानी के स्रोत, खेतों में लहलहाती फसलें, किचन गार्डन, फलों से लदे हुए बगीचे, देखकर बच्चे बहुत खुश हुए और वहाँ के शुद्ध वातावरण में इधर-उधर घूमना शुरू कर दिए.

पलक ने कहा हमारा शहर कितना प्रदूषित हो गया है. हवा इतनी जहरीली हो गई है कि सांस लेना भी मुश्किल हो गया है. मास्क लगाकर तो मेरा दम ही घुट जाएगा, ऐसा लगता है.

सभी बच्चे पलक की बात पर सहमत हुए. अनुज ने कहा पूर्वा हमें अपने मम्मी पापा से तो मिलाओ. यह सुनकर पुरवा थोड़ा उदास हो गई. फिर उसने कहा- चलो मैं तुम्हें अपनी माँ से मिलाती हूँ.

ऐसा कहते पूर्वा, अपने दोस्तों को खेतों के बीच में खड़े एक बड़े से आम के पेड़ के नीचे लेकर गई और आम के पेड़ से लिपट कर बोली, देखो यह है मेरी माँ, मेरी मम्मी तो बचपन में ही चल बसी. तब से लेकर अभी तक इस आम के पेड़ ने हीं मुझे अपनी शीतल छाया दी है, खाने के लिए मीठे फल दिए, सांस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन दिया और जब कभी भी मैं परेशान हुई, तो इसने मुझे अपने तने से लिपटा कर मीठी नींद भी सुलाई है. मेरी मम्मी तो भगवान के घर चली गई हैं, पर जाते-जाते

उन्होंने शायद मेरी जिम्मेदारी मेरी इस नई मन को सौंप कर गई, आज भी मैं जब कभी भी अकेले होती हूँ, तो आकर अपनी इस नई माँ से ही बात करती हूँ और मेरी नई माँ ना सिर्फ मुझे प्यार करती है बल्कि यहाँ रहने वाले हजारों छोटे-छोटे पशु-पक्षियों को भी अपना आसरा दिए हुए हैं, ना जाने कितने पक्षियों के घोंसले, अंडे, उनका घर यहाँ सुरक्षित है.

सभी बच्चे बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा क्या हम भी तुम्हारी नई माँ से थोड़ा मिल सकते हैं, पूर्वा ने कहा- बिल्कुल. बस फिर क्या था, अमन अपना झूला डालने की तैयारी में लग गया. टायर मे रस्सी लगाकर झूला बना ही डाला.

रिशु अपनी कहानी की किताब लेकर ठंडी छाया में नीचे बैठ गया. पराग और आशु पेड़ के ऊपर ही चढ़ गए. गुंजन वहीं डाली पर ही लटकने लगी.

पेड़ पर रहने वाले छोटे-छोटे चिड़ियों-पक्षियों की चहचहाहट, उनके घोसले भी दिखाई दे रहे थे, सब बच्चे धमाचौकड़ी मचाने लगे.

पूर्वा अपनी नई माँ से लिपट कर कहने लगी थैंक यू माँ, तुमने ना सिर्फ मुझे, बल्कि मेरे दोस्तों को भी अपना भरपूर प्यार दिया और मेरे सारे दोस्तों को भी वृक्षों का महत्व समझ में आ गया.

हमें छोटे-छोटे पौधे रोपने चाहिए, प्रकृति की रक्षा करनी चाहिए और हम सब मिलकर इस काम को आगे बढ़ाएंगे.

दिनभर प्रकृति की गोद में खेल कूद कर बच्चे शाम को वापस लौटे, तो उन्होंने अपने आप से वायदा किया कि हम सभी पौधे लगाएंगे. पूर्वा की मम्मी की तरह हम सब भी अपने पौधों से प्यार पाएंगे.

वाणी मसीह द्वारा भेजी गई कहानी

टिंकु नाम का एक छोटा बच्चा था. वह हमेशा टीवी में कार्टून या मोबाइल में कार्टून देखता रहता था. पापा मम्मी के बहुत समझाने के बाद भी टिंकू घर के अंदर ही टीवी में कार्टून देखता रहता था. एक दिन स्कूल में टिंकू की शिक्षिका ने पेड़ हमारे दोस्त नामक पाठ पढ़ाया. जिसमें टिंकु को पेड़ों के महत्व की जानकारी मिली कि पेड़ हमारे लिए कितने उपयोगी हैं.

पेड़ों की वजह से हमें ऑक्सीजन मिलता है, पेड़ों की वजह से बारिश होती है, गर्मी के समय में पेड़ों के नीचे कई लोग बैठ कर आराम कर सकते हैं. पेड़ों में कई पक्षियों के घोंसले होते हैं, रात के समय पक्षी आकर वहां रहते हैं, पेड़ों में कई प्रकार के पक्षी निवास करते हैं पेड़ों की जड़ों के कारण मिट्टी का जमाव होता है.

शिक्षिका ने बहुत ही अच्छे ढंग से पेड़ों के महत्व के बारे में बच्चों को बताया और सभी बच्चो से कहा क्या आपके घर के पास भी पेड़ हैं ? क्या आप कभी अपने उस पेड़ के पास जाकर खेलते हैं ? टिंकू ने सोचा कि हां मेरे घर के पास भी एक बड़ा सा आम का पेड़ है लेकिन मैं वहां कभी नहीं गया फिर टिंकू ने तय किया कि मैं उस आम के पेड़ के पास जरूर जाऊंगा और जब टिंकू वहां गया तो उसने देखा कि आम के पेड़ के पास एक छोटा सा कुत्ता बैठा हुआ था और पेड़ में बहुत सारे पक्षी थे. उनकी आवाज बहुत अच्छी लग रही थी और एक छोटी गिलहरी भी पेड़ में यहां से वहां कूद रही थी. अब टिंकू रोज स्कूल से आने के बाद घर में कार्टून नहीं बल्कि उस पेड़ के नीचे जाकर खेलता था कुछ पढ़ता था. उसे देखकर टिंकू के दोस्त मोना, विजय, लक्की, रुचि, गोल्डी भी रोज खेलने को आते थे और सभी बच्चे बहुत मजे करते थे.

पेड़ में विजय और गोल्डी ने मिलकर एक मचान भी बनाया था जहां वह ऊपर बैठ जाया करते थे और चिड़ियों पक्षियों को बहुत पास से देखते थे और पक्षियों के लिए छोटे-छोटे घर भी बनाए थे. और गिलहरी एक डाल से दूसरे डाल में घूमती रहती थी, रंग बिरंगी तितलियां आती थी. मोना, लक्की, रुचि पेड़ में चढ़कर छलांग लगाते रहती थी. विजय ने एक टायर से झूला भी बनाया था जिसमें सभी बच्चे झूला झूला करते थे और टिंकू नीचे बैठकर कहानी सुनाता था और सभी बच्चे पेड़ों के चारों तरफ खेलते हुए कहानी, चुटकुले का आनंद लेते थे और कभी कभी स्कूल की होमवर्क भी साथ मिलकर खेल खेल में पूर्ण कर लेते थे. टिंकू के मम्मी, पापा और सभी बच्चों के मम्मी पापा बहुत खुश हैं कि बच्चों ने पेड़ों के महत्व को समझा और प्रकृति के महत्व को जाना है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

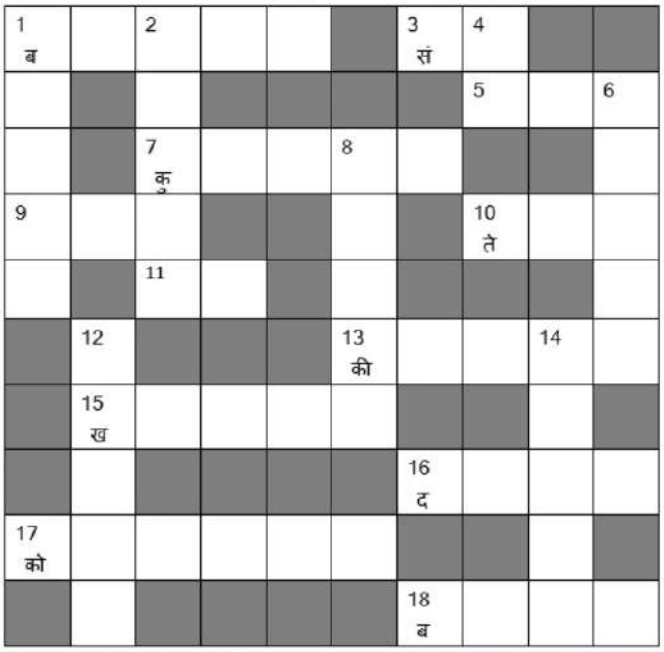

बाएँ से दाएँ

1. जंगली मुर्गा 3. चिंता, फिक्र 5. नौटंकी 7. बड़े सवेरे 9. इन लोग 10. दीमक 11. हड्डी 13. तालाब पोखरों मे पाये जाने वाले काकरोच जैसा काला जन्तु 15. मटमैली, बिना नहाए, कंघी की हुई, गंदे कपड़े वाली लड़की 16. आधा अधूरा पीसा या मसला हुआ, अधपका 17. एक भाजी (शाक) का नाम 18. मजदूर

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 क	र	ध	2 न			3 स	र	दं	4 ग
र			5 ग	ह	ब	र			स
छु			री			ल			म
6 ल	7 प	र	हा			8 ग	र	9 ग	स
	र			10 का	11 ला			वं	
	घ			12 बा	वा			इ	
13 ब	नी	हा	14 र			15 न	नी	हा	16 ल
न			ह			त			ट
गी			17 प	ठ	व	नी			क
18 स	र	प	ट			19 न	हा	व	न

ऊपर से नीचे

2. गुनगुना 4. दया 6. सर झुका कर चलने वाला 8. पतंगा 12. रखवाला, चौकीदार 14. शर्मिला

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में सम्वर्धन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)
आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।